साप्ताहिक
आरएनआई न. :- जेकेएचआईएन/25/ए0631
सबका जम्मू कश्मीर
हिन्दी • वर्षः 2 • अंकः 3 • कठुआ, शनिवार 17 जनवरी 2026 • पृष्ठः 16 • मूल्यः 5 रुपए

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यात्रा उद्योग के साथ मजबूत साझेदारी का आह्वान किया

सबका जम्मू कश्मीर

मुंबई : मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आज मुंबई में यात्रा और व्यापार क्षेत्र के प्रमुख हितधारकों को संबोधित करते हुए उनसे जम्मू–कश्मीर को एक सुरक्षित, जीवंत और हर मौसम में पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा देने में सरकार के साथ साझेदारी करने का आह्वान किया।

महाराष्ट्र और गुजरात के ट्रैवल एजेंटों, टूर ऑपरेटरों और ट्रैवल एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि यह पहल पर्यटन स्थल को बेचने के बारे में नहीं, बल्कि विश्वास और साझेदारी को मजबूत करने के बारे में है। मुख्यमंत्री ने कहा, "आज मैं जम्मू–कश्मीर पर्यटन को बढ़ावा देने नहीं आया हूं। मैं आप लोगों के बीच जम्मू–कश्मीर को एक पर्यटन स्थल के रूप में बेचने नहीं आया हूं। आज मैं जम्मू–कश्मीर की सुंदरता के बारे में बात करने नहीं आया हूं। कश्मीर की सुंदरता के बारे में जितना मैं जानता हूं, उतना ही आप भी जानते हैं।"

उन्होंने जम्मू–कश्मीर और महाराष्ट्र और गुजरात के पर्यटन जगत के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों पर जोर दिया। महाराष्ट्र और गुजरात के ट्रैवल एजेंटों, टूर ऑपरेटरों और ट्रैवल एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने जम्मू–कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र को वर्षों से समर्थन और मजबूत करने में महाराष्ट्र द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

उन्होंने पिछले साल पहलगाम हमले के बाद महाराष्ट्र स्थित ट्रैवल एजेंसियों द्वारा दिखाई गई एकजुटता और निरंतर समर्थन की विशेष रूप से सराहना की और कहा कि उनके भरोसे ने पर्यटन के आगमन और गंतव्य में विश्वास बहाल करने में मदद की। मुख्यमंत्री ने कहा, "महाराष्ट्र हमेशा से जम्मू–कश्मीर पर्यटन के लिए सबसे मजबूत स्रोत बाजारों में से एक रहा है। ट्रैवल जगत द्वारा, विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण समय में, दिखाया गया समर्थन एक गहरी और स्थायी साझेदारी को दर्शाता है।"

मुंबई में महाराष्ट्र और गुजरात ट्रैवल फ्रेटरनिटी आउटरीच के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में जम्मू–कश्मीर पर्यटन को बढ़ावा देने में योगदान देने वाले प्रमुख ट्रैवल एजेंटों और संगठनों को सम्मानित भी किया गया।

मुख्यमंत्री ने अवकाश, साहसिक, तीर्थयात्रा और स्वास्थ्य पर्यटन सहित क्षेत्र के विविध पर्यटन विकल्पों पर प्रकाश डाला और सुरक्षा, बुनियादी ढांचे के विकास और पर्यटन–अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया।

आउटरीच कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के सलाहकार नासिर असलम वानी; सांसद गुरिंदर सिंह शम्मी; गुलमर्ग के विधायक

■ शेष पेज 2...

राज्यसभा के उपसभापति ने 28वें सीएसपीओसी के त्वरित सत्र के दौरान देश के त्रिस्तरीय शासन में महिलाओं के नेतृत्व के बारे में बताया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : राज्यसभा के उपसभापति ने आज नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल के अध्यक्षों और पीठासीन अधिका. रियों के 28वें सम्मेलन (सीएसपीओसी) के त्वरित सत्र को संबोधित किया। सम्मेलन का विषय था ष्भारत की त्रिस्तरीय शासन प्रणाली में महिलाओं का योगदानष् ।

माननीय उपाध्यक्ष ने उपस्थित विशिष्ट प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए देश के त्रिस्तरीय लो. कतांत्रिक ढांचे में शासन में महिलाओं की भागीदारी के प्रत्यक्ष अनुभव साझा किए। इसमें केंद्रीय स्तर पर संसद, राज्य विधानसभाएं और स्थानीय स्वशासन संस्थाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यह ढांचा केंद्र, राज्यों और जमीनी स्तर की संस्थाओं के बीच ऊर्ध्वाधर शक्ति–साझाकरण पर आधारित है और महिलाओं को संवैधानिक और संस्थागत रूप से, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर, शामिल किए जाने के कारण वैश्विक महत्व प्राप्त कर चुका है। माननीय उपाध्यक्ष ने कहा कि भारत की विकास यात्रा से पता चलता है कि महिलाओं की भागीदारी लोकतांत्रिक वैधता को कैसे मजबूत करती है और शासन के परिणामों में सुधार लाती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का भारत का सफर हमारी सभ्यतागत परंपराओं

■ शेष पेज 2...

उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के सम्मान में भोज आयोजित किया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति श्री सी. पी.राधाकृष्णन ने आज नई दिल्ली के संविधान सदन में राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के सम्मान में भोज आयोजित किया। 14 से 16 जनवरी, 2026 तक भारत में राष्ट्रमंडल संसदों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के 28वें सम्मेलन के दौरान भोज आयोजित किया गया।

सभापति ने भारत के ऐतिहासिक संसद भवन के संविधान सदन में पीठासीन अधिकारियों और संसदीय अध्यक्षों की मेजबानी पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यह भवन साढ़े सात दशकों से अधिक समय से भारत के जीवंत और समृद्ध संसदीय लोकतंत्र का प्रतीक है।

श्री राधाकृष्णन ने कहा कि यह सम्मेलन राष्ट्रमंडल लोकतंत्रों को एकजुट करने वाले सामूहिक सद्भाव और साझा उद्देश्य की भावना दर्शाता है। श्री राधाकृष्णन ने भारत की सभ्यतागत विचारधारा से प्रेरित संवाद, सहयोग और पारस्परिक सम्मान द्वारा एक साथ आगे बढ़ने के महत्व पर

■ शेष पेज 2...

किसानों के लिए ऐतिहासिक सुधार : केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नए 'सीड एक्ट' की दी जानकारी

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज मीडिया से बात करते हुए नए सीड एक्ट (ैममक ।बज 2026) की विशेषताओं और उसके किसानों पर होने वाले प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह विधेयक किसानों की सुरक्षा, बीज की गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने वाला ऐतिहासिक कदम है।

"हर बीज की पूरी कहानी अब किसानों तक

पहुँचेगी" मीडिया के सवालों के जवाब में केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि अब देश में बीज की ट्रेसिबिलिटी (ज्तंबमंइपसपजल) की व्यवस्था स्थापित की जाएगी। उन्होंने बताया, "हमने कोशिश की है कि ऐसा सिस्टम बने, जिसमें यह पूरा पता चल सके कि बीज कहां उत्पादित हुआ, किस डीलर ने दिया और किसने बेचा।" हर बीज पर फ्ट कोड होगा, जिसे स्कैन करते ही किसान यह जान सकेगा कि वह बीज कहां से आया है। इससे घटिया या नकली बीज न केवल रोके जा सकेंगे बल्कि यदि वे बाजार में आएंगे भी तो

■ शेष पेज 2...

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने स्टार्टअप पे चर्चा कार्यक्रम में भारतीय युवाओं में बढ़ते आत्मविश्वास का उल्लेख किया

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में स्टार्टअप पे चर्चा संवाद को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि नए और उभरते भारत में सबसे स्पष्ट बदलाव देश के युवाओं में बढ़ता आत्मविश्वास है। उन्होंने कहा कि आज के युवा जोखिम उठाने, उद्यमशीलता अपनाने और नए विचारों पर काम करने को अत्यंत इच्छुक हैं। यह करियर विकल्पों को लेकर पहले जो झिझक थी उसमें उल्लेखनीय परिवर्तन का संकेत है। श्री गोयल ने कहा कि यह आत्मविश्वास नवाचार और भविष्योन्मुखी विकास के प्रति भारत की मान. सिकता में मूलभूत बदलाव को दर्शाता है। श्री गोयल ने संवाद के

■ शेष पेज 2...

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

शेष पेज 1 से.....

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला...

पीरजादा फारूक अहमद शाह; पर्यटन निदेशक जम्मू विकास गुप्ता; और महाराष्ट्र और गुजरात के प्रमुख ट्रैवल निकायों के प्रमुख और प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस संवाद ने जम्मू–कश्मीर को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में स्थापित करने के लिए संवाद, सहयोग और नवप्रवर्तित प्रतिबद्धता का मंच प्रदान किया।

राज्यसभा के उपसभापति ...

में गहराई से निहित है, जहां विचार–विमर्श सभाओं और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की सार्थक भागीदारी रही है।

देश के संवैधानिक विकास का उल्लेख करते हुए माननीय उपाध्यक्ष ने कहा कि स्वतंत्रता से बहुत पहले, 1920 के दशक में ही कई प्रांतों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हो गया था। 1950 में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाकर, भारत ने गणतंत्र की स्थापना से ही राजनीतिक समानता सुनिश्चित करते हुए एक साहसिक और प्रगतिशील कदम उठाया।

माननीय उपाध्यक्ष ने आगे कहा कि 1990 के दशक के आरंभ में 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से लैंगिक समानता के प्रति प्रतिबद्धता को और मजबूत किया गया। इसमें ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण अनिवार्य किया गया था। उन्होंने बताया कि तब से दो तिहाई से अधिक राज्यों ने ग्रामीण स्थानीय निकायों में और लगभग आधे राज्यों ने शहरी स्थानीय निकायों में इस प्रावधान को बढ़ाकर 50 प्रतिशत आरक्षण कर दिया है।

महिलाओं की व्यापक भागीदारी के बारे में बताते हुए, माननीय उपाध्यक्ष ने भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई टिप्पणियों का उल्लेख किया और कहा कि वर्तमान में लगभग 15 लाख महिलाएं स्थानीय स्वशासन निकायों में निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने इसे विश्व स्तर पर महिलाओं के राजनी. तिक प्रतिनिधित्व का सबसे बड़ा प्रयोग बताया।

माननीय उपाध्यक्ष ने कहा कि कई महिलाओं के लिए, विशेषकर ग्रामीण और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों की महिलाओं के लिए, स्थानीय निकाय सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का पहला माध्यम होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भागीदारी का यह अभूतपूर्व स्तर स्थानीय शासन की गुणवत्ता में ठोस सुधार ला रहा है।

माननीय उपाध्यक्ष ने इस बात का भी उल्लेख किया कि अध्ययन और जमीनी अनुभव से पता चलता है कि महिलाओं के नेतृत्व वाले स्थानीय निकाय उच्च स्तर की पारदर्शिता, कड़ी निगरानी और मजबूत जवाबदेही प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने कहा कि समुदायों के साथ घनिष्ठ जुड़ाव के कारण, अक्सर धन की बर्बादी कम हो जाती है और सरक. ारी कार्यक्रमों और योजनाओं का लाभ लक्षित लाभार्थियों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचता है।

शासन सम्बंधी प्राथमिकताओं का उल्लेख करते हुए माननीय उपाध्यक्ष ने कहा कि महिला नेताओं ने लगातार सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पोषण और सामाजिक कल्याण सेवाओं जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने कहा कि शासन के तीनों स्तरों पर महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के साथ, जोर धीरे–धीरे महिला विकास से हटकर महिला नेतृत्व वाले विकास की ओर स्थानांतरित हो गया है ।

माननीय उपाध्यक्ष ने आगे कहा कि स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दी है और अनुभवी महिला नेताओं का एक बड़ा समूह तैयार किया है जो राज्य विधानसभाओं और राष्ट्रीय संसद में आगे बढ़ती हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी कई नेता मंत्री, अध्यक्ष, मुख्यमंत्री और पीठासीन अधिकारी सहित देश के सर्वोच्च संवैधानिक पदों पर अपनी सेवाएं दे चुकी हैं।

हाल ही में हुए संवैधानिक सुधारों का जिक्र करते हुए माननीय उपसभापति ने कहा कि 106वें संवैधानिक संशोधन , श्‌ नारी शक्ति वंदन अधिनियमश से पारित होने से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान हुआ है, यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । उन्होंने इसे संसदीय प्रतिनिधित्व में लैंगिक संतुलन के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता की पुष्टि बताया।

भारत की विकास यात्रा से प्राप्त प्रमुख सीखों का सारांश प्रस्तुत करते हुए, माननीय उपाध्यक्ष ने कहा कि स्थानीय शासन महिलाओं के नेतृत्व के लिए एक स्थायी प्रवेश बिंदु प्रदान करता है। उन्होंने बताया कि विविधता और व्यापकता समावेशन में बाधा नहीं हैं और महिलाओं का नेतृत्व केवल प्रतिनिधित्व के आंकड़ों में सुधार करने के बजाय शासन के परिणामों में सुधार करता है।

माननीय उपसभापति ने राष्ट्रमंडल देशों के लिए कहा कि जब शासन में महिलाओं की समान भागीदारी होती हैं तो समावेशी संसदें अधिक मजबूत बनती हैं और लोकतंत्र भी तभी फलता–फूलता है। भारत का अनुभव इस साझा विश्वास को पुष्ट करता है।

उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन...

बल दिया।

संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन संवैधानिक अधिकारियों की भूमिका का उल्लेख करते हुए श्री राधाकृष्णन ने विचारों की विविधता के बीच शालीनता और गरिमा के साथ बहस, संवाद और चर्चा को सुगम बनाने की साझा और प्राथमिक उत्स्तरदायित्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रमंडल देशों की भौगोलिक स्थिति, संस्कृति और ऐतिहासिक अनुभव भिन्न हैं, फिर भी वे समान संसदीय लोकाचार और लोकतांत्रिक सिद्धांतों एवं मूल्यों के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता से बंधे हैं।

श्री राधाकृष्णन ने कहा कि पीठासीन अधिकारी विधायिका की गरिमा और लोगों की आकांक्षापूर्ण आवाज के अंतिम संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं, जिन्हें लोकतंत्र के पवित्र सदन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यवस्थित आचरण के बीच सावधानीपूर्वक संतुलन बनाए रखने का दायित्व सौंपा गया है।

भारत की लोकतांत्रिक विरासत का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति ने भारत को लोकतंत्र की जननी बताया। उन्होंने कहा कि भारत राष्ट्रमंडल को केवल ऐतिहासिक संगठन नहीं, बल्कि समान साझेदारों के बीच सहयोग के अहम और भविष्योन्मुखी मंच के तौर पर देखता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि राष्ट्रमंडल संसदीय अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों का सम्मेलन – सीएसपीओसी जैसे मंच संस्थागत ज्ञान, सर्वोत्तम प्रचलन और अनुभवों को साझा करने के बहुमूल्य अवसर प्रदान करते हैं।

श्री राधाकृष्णन ने कहा कि इस प्रकार के आदान–प्रदान से विधानमंडलों की स्थिति अनुकूलता, पारदर्शिता और समावेशिता बढ़ाकर उन्हें सुदृढ़ करने में योगदान मिलता है। सहभोजन या सामुदायिक भोजन की परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने समानता, बंधुत्व और नाते को बढ़ावा देने में इसके प्रतीकात्मक महत्व की चर्चा की।

उन्होंने संस्कृत प्रार्थना ष्समस्त लोकाः सुखिनो भवन्तुष – यानी सभी प्राणी सर्वत्र सुखी और स्वतंत्र हों – का आह्वान करते हुए साझा प्रयासों द्वारा अपने लोगों के कल्याण और समृद्धि के लिए अथक प्रयास करने की राष्ट्रमंडल विधानमंडलों की सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

श्री राधाकृष्णन ने विश्वास व्यक्त किया कि सीएसपीओसी 2026 के दौरान होने वाली चर्चा से राष्ट्रमंडल देशों के बीच संसदीय संबंध, आपसी समझ और सहयोग और भी सुदृढ़ होंगे।

संबोधन के समापन में उन्होंने भारत आने वाले गणमान्य अतिथियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं और आशा व्यक्त की कि उनकी भारत यात्रा सफल और स्मरणीय रहेगी।

कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला, केंद्रीय मंत्रीगण, राज्यसभा उपसभापति श्री हरिवंश, अंतर–संसदीय संघ की अध्यक्ष डॉ. तुलिया एकसन, राष्ट्रमंडल संसदीय संघ के अध्यक्ष डॉ. क्रिस्टोफर कलीला, राज्यसभा और लोकसभा के महासचिव और राष्ट्रमंडल के विभिन्न देशों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों ने भाग लिया।

किसानों के लिए...

जिम्मेदार व्यक्ति पर शीघ्र कार्रवाई संभव होगी।

"अब घटिया बीज सिस्टम में आएंगे ही नहीं"

कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने बताया कि जैसे ही ट्रेसिबिलिटी लागू होगी, नकली या खराब बीज की पहचान तुरंत हो जाएगी। उन्होंने कहा, "खराब बीज आएंगे ही नहीं, और अगर आएंगे तो पकड़े जाएंगे। जिसने खराब बीज दिया, उसे दंड दिया जाएगा।" इससे किसानों को भ्रमित करने वाली कंपनियों और डीलरों की मनमानी पर लगाम लगेगी।

"बीज कंपनियों का रजिस्ट्रेशन होगा अनिवार्य"

श्री चौहान ने कहा कि अब हर सीड कंपनी का रजिस्ट्रेशन किया जाएगा, जिससे यह साफ रहेगा कि कौन सी कंपनी अधिकृत है। उन्होंने कहा, "पंजीकृत कंपनियों की जानकारी उपलब्ध रहेगी और कोई भी अनधिकृत विक्रेता बीज नहीं बेच पाएगा।" इससे बाजार में फर्जी कंपनियाँ खत्म होंगी और किसानों को सही स्रोत का बीज मिलेगा।

"परंपरागत बीजों पर कोई पाबंदी नहीं"

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने इस भ्रम को दूर किया कि नया कानून किसानों के परंपरागत बीजों पर रोक लगाएगा। उन्होंने स्पष्ट कहा, "किसान अपने बीज बो सकते हैं, दूसरे किसान को बीज दे सकते हैं। स्थानीय स्तर पर जो परंपरागत बीज विनिमय की परंपरा है, वो जारी रहेगी।

इसमें कोई दिक्कत नहीं है।" उन्होंने उदाहरण दिया कि ग्रामीण इलाकों में बोनी के समय किसान आपस में बीज लेतेदेते हैं और बाद में उसे सवा गुना वापिस कर देते हैं, यह पारंपरिक प्रणाली आगे भी जारी रहेगी।

ष्अब घटिया बीज बेचने वालों को 30 लाख तक जुर्माना और सजा"

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि बीजों की गुणवत्ता पर अब किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। श्री चौहान ने कहा, "अभी तक 500 रुपये तक का जुर्माना था, अब प्रस्ताव है कि 30 लाख रुपये तक जुर्माना हो और अगर कोई जानबूझकर अपराध करता है तो सजा का भी प्रावधान है।" उन्होंने कहा कि सब कंपनियां खराब नहीं हैं, लेकिन जो किसान को धोखा देंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

"ष्‌ और देसी कंपनियां रहेंगी मैदान में मजबूत"

कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि सीड एक्ट में तीनों स्तर पर प्रावधान किए गए हैं– सार्वजनिक क्षेत्र (ष्‌ कृषि विश्वविद्यालय, झ्टझ्), देसी कंपनियां जो उच्च गुणवत्ता के बीज बनाती हैं, विदेशी बीजों के लिए उचित मूल्यांकन व्यवस्था।उन्होंने कहा, "विदेश से आने वाले बीज पूरी तरह जांच और मूल्यांकन के बाद ही स्वीकृत होंगे। हमारे सार्वजनिक और देसी निजी क्षेत्र को मजबूत बनाया जाएगा ताकि किसानों तक अच्छे बीज पहुंचें।"

"किसानों को जागरूक करने के लिए व्यापक अभियान"

किसानों में अवेयरनेस की कमी पर पूछे गए सवाल पर श्री चौहान ने कहा, "हमने 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' जैसे प्रयास शुरू किए हैं ताकि वैज्ञानिक, अधिकारी और प्रगतिशील किसान गांवों तक जाकर किसानों को अवेयर कर सकें।" उन्होंने बताया कि देश के सभी 731 कृषि विज्ञान केंद्र (झ्टझ्) किसानों को बीजों की गुणवत्ता, बीज चयन और शिकायत निवारण की जानकारी देने में प्रमुख भूमिका निभाएंगे।

"नकली बीज बेचने वालों पर सख्त सजा"

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने एक बार फिर दोहराया कि अब यदि कोई जानबूझकर घटिया बीज तैयार करेगा या बेचेगा, तो उसके खिलाफ 3 साल तक की जेल और 30 लाख तक का जुर्माना संभव है। उन्होंने कहा, "पहले यह मामला कमजोर था, अब हम इसे प्रभावी बना रहे हैं ताकि किसान को न्याय मिले।"

"1966 का पुराना कानून अब होगा आधुनिक"

उन्होंने कहा कि 1966 का सीड एक्ट पुराने समय का था जब न तकनीक थी न डेटा। अब हम एक आधुनिक कानून ला रहे हैं, जो ट्रेसिबिलिटी, डिजिटल रिकॉर्ड और जवाबदेही के सिद्धांत पर आधारित है ताकि भविष्य में कोई भी किसान ठगा न जाए।

ष्राज्य सरकारों के अधिकार रहेंगे यथावत"

इस सवाल पर कि कुछ लोगों ने यह आशंका जताई थी कि नया कानून राज्यों के अधिकार घटा देगा, इस पर कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने साफ कहा, "कृषि राज्य का विषय है। राज्य सरकारों के अधिकार वैसे ही बने रहेंगे। केंद्र केवल समन्वय करेगा और राज्यों के सहयोग से यह कानून लागू होगा।"

"हमारा लक्ष्य– हर किसान को सही बीज"

श्री चौहान ने कहा, "हमारा उद्देश्य है कि हर किसान को गुणवत्तापूर्ण बीज मिले। अच्छी कंपनियों को प्रोत्साहन और गलत करने वालों पर कड़ी कार्रवाई, यही इस कानून का सार है।" उन्होंने कहा कि सीड एक्ट 2026 के माध्यम से सरकार हर किसान को सुरक्षित, भरोसेमंद और उत्पादक बीज उपलब्ध कराने की दिशा में एक निर्णायक कदम उठा रही है।

केंद्रीय वाणिज्य और...

दौरान, कई व्यवसायिक संस्थापकों और सफल उद्यमियों से बात. चीत की। उच्च विकास क्षमता वाले क्षेत्रों के सवाल पर श्री गोयल ने पर्यटन और कौशल विकास को चिन्हित किया। उन्होंने कहा कि ये क्षेत्र राष्ट्रीय आवश्यकताओं और उद्यमशीलता दोनों में महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने बड़ी आबादी विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचने में इन क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी को समेकित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए देश में कार्यबल तैयार करने हेतु प्रशिक्षण, पुनः प्रशिक्षण और दोबारा कौशल विकास के महत्व पर बल दिया।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने मुक्त व्यापार समझौतों–एफटीए के बारे में कहा कि दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत के हाल के समझौते स्टार्टअप और उद्यमियों को महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि इन समझौतों से निवेशकों में निश्चितता और विश्वास उत्पन्न होगा साथ ही भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए नए बाजार खुलेंगे। उन्होंने स्टार्टअप्स को निवेश आकर्षित करने और वैश्विक विस्तार के लिए विदेशों के साथ स्टार्टअप–टू–स्टार्टअप सहयोग और साझेदारी तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री गोयल ने सेवा, गतिशीलता, भुगतान, संवहनीयता, नवीकरणीय ऊर्जा और उन्नत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अवसरों की चर्चा की।

डीप–टेक इनोवेशन (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग, जैव प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स और एडवांस्ड मैटेरियल्स इत्यादि) पर श्री गोयल ने पूरे देश में हो रही प्रगति पर संतोष और आशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हाल की नीतिगत चर्चाओं में डीप–टेक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित हुआ है और सरकार द्वारा घोषित 10 हजार करोड़ रुपये के दूसरे स्टार्टअप फंड ऑफ फंड्स से डीप–टेक स्टार्टअप्स, विशेष रूप से इनके विकास के शुरुआती और महत्वपूर्ण चरणों में काफी सहायता मिलेगी।

उन्होंने कहा कि देशभर के इनक्यूबेटरों (स्टार्टअप्स के लिए ऐसा केंद्र जो शुरुआती चरण के व्यवसायों को ऑफिस स्पेस, मार्गदर्शन, वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करता है) और शैक्षणिक संस्थानों के साथ उनकी बातचीत से इस क्षेत्र में अच्छी प्रगति दिखी है।

तेजी से घूम रही धरती, लेकिन छोटे होते जा रहे जा रहे दिन, रिपोर्ट में दावा

धरती का रोटेशन धीरे-धीरे धीमा होता चला गया. आज से करीब 1 से 2 अरब साल पहले, एक दिन महज 19 घंटे का हुआ करता था, खासकर इसलिए क्योंकि चंद्रमा धरती के बहुत करीब था और उसके गुरुत्वाकर्षण का असर बहुत ज्यादा था. साथ ही 2020 में, वैज्ञानिकों ने रोटेशन को 1970 के दशक के बाद से किसी भी समय की तुलना में तेजी से दर्ज किया.

Icdk tEe d'ehj

धरती तेजी से घूम रही है और इस वजह से दिन छोटे होते जा रहे हैं. एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आने वाले हफ्तों में धरती सामान्य से तेज गति से घूमेगी, जिससे दिन थोड़े छोटे हो जाएंगे. लाइव साइंस ने वैज्ञानिकों की रिपोर्ट के अनुसार यह जानकारी दी है कि 9 जुलाई, 22 जुलाई और 5 अगस्त को चंद्रमा की स्थिति धरती के रोटेशन को प्रभावित करेगी, जिससे हर दिन 24 घंटों से 1.3 से 1.51 मिलीसेकंड छोटा हो जाएगा.

आमतौर पर, धरती पर एक दिन करीब 86,400 सेकंड या 24 घंटे का होता है, लेकिन साइंस न्यूज पोर्टल लाइव साइंस के अनुसार, धरती का रोटेशन अभी स्थिर नहीं है; यह कई वजहों से प्रभावित भी है, जिनमें चंद्रमा और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल, ग्रह का चुंबकीय क्षेत्र और प्राकृतिक या मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी के द्रव्यमान में बदलाव शामिल हैं. हालांकि अगले कुछ हफ्तों में, चंद्रमा की स्थिति में बदलाव की वजह से धरती पर दिन थोड़े छोटे हो जाएंगे.

करोड़ों साल पहले एक दिन में कितने घंटे

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो धरती का रोटेशन धीरे–धीरे धीमा होता चला गया है. आज से करीब 1 से 2 अरब साल पहले, एक दिन महज 19 घंटे का हुआ करता था, खासकर इसलिए क्योंकि चंद्रमा धरती के बहुत करीब था और उसके गुरुत्वाकर्षण का असर बहुत ज्यादा था. अध्ययनों से यह भी पता चला है कि करीब 7 करोड़ साल पहले रहने वाले टायरानोसॉरस रेक्स के दौर में औसत रोजाना का रोटेशन करीब 23 1/2 घंटे का रहा होगा. फिर समय के साथ, चंद्रमा जैसे–जैसे धरती से दूर होता गया, दिन लंबे होते चले गए.

इस हफ्ते अब तक साल के सबसे छोटे दिन देखे गए हैं. यूएस नेवल ऑब्जरवेटरी और इंटरनेशनल अर्थ रोटेशन एंड रिफ्रेंस सिस्टम सर्विस द्वारा शुक्रवार को जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, बुधवार के दिन धरती का रोटेशन 24 घंटे से करीब 1. 34 मिलीसेकंड कम था. टाइम एंड डेट वेबसाइट के पूर्वानुमानों के अनुसार, इस महीने के अंत में और अगस्त की शुरुआत में और तेज चक्कर लगने की उम्मीद है.

पिछले साल जुलाई में दर्ज हुआ था सबसे छोटा दिन

खास बात यह है कि 2020 में, वैज्ञानिकों ने धरती के रोटेशन को 1970 के दशक के बाद से किसी भी समय की तुलना में तेजी से दर्ज किया. अब तक का सबसे छोटा दिन 5 जुलाई, 2024 को दर्ज किया गया था, जो सामान्य से 1.66 मिलीसेकंड छोटा था.

हालांकि यह पूरी तरह से असामान्य प्रक्रिया नहीं है. हाल के दिनों में यह रोटेशन सामान्य से तेज रहे हैं. पिछले एक दशक में औसत दिन का आकार थोड़ा छोटा हो गया है. पिछले 5 सालों में, कई बार 24 घंटे से भी कम समय में रोटेशन पूरा हो गया है.

हालांकि दिन होने की प्रक्रिया लंबी नहीं होगी

अगले कुछ दिनों में धरती की इक्वेटर से चंद्रमा की दूरी ग्रह के घूमने की गति को बढ़ा सकती है, उसी तरह जैसे एक घूमता हुआ लट्टू अपनी धुरी बदलने पर तेजी से घूमता है. जलवायु संबंधी बदलाव, जैसे बर्फ का पिघलना और भूजल का प्रवाह, भी पृथ्वी के रोटेशन में बदलाव की वजह बने हैं. यहां तक कि भूकंप और मौसमी परिवर्तन भी दिनों की लंबाई पर असर डाल सकते हैं. हालांकि यह भी देखने वाली बात है कि दीर्घकालिक रुझान यह इशारा नहीं करते कि दिन हमेशा के लिए छोटे होते जाएंगे. हकीकत में यह इसके विपरीत है क्योंकि करोड़ों सालों में दिन लंबे ही होते चले गए हैं. ऑस्टिन स्थित टेक्सास यूनिवर्सिटी के अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के रिसर्च प्रोफेसर क्लार्क आर. विल्सन ने दावा करते हुए कहा कि दिनों की लंबाई बढ़ने का यह रुझान जारी रहने की उम्मीद है, हालांकि यह प्रक्रिया बहुत ही धीमी है कि यह दर "मानव समय के पैमाने से कहीं अधिक" है.

1000 साल पुराने 'समाधि वाले बाबा' के कंकाल को मिला घर, क्यों है ये इतना खास?

गुजरात के मेहसाणा जिले के वडनगर में 2019 में खुदाई करके 1,000 साल से अधिक का पुराना कंकाल निकाला गया था. इस कंकाल को अब अपना नया घर मिल गया है. इसे वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया है.

सबका जम्मू कश्मीर

गुजरात में 15 मई को पांच घंटे की कवायद और 15 विशेषज्ञों की निगरानी के बाद 1000 साल पुराने कंकाल को वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया. इस संग्रहालय का उद्घाटन इस साल जनवरी में किया गया था. 1000 साल पुराने कंकाल को 'समाधि वाले बाबाजी' कहा जाता है. इस कंकाल को मेहसाणा जिले से साल 2019 में खुदाई करके निकाला गया था. तब से इसे अस्थायी तंबू के अंदर रखा गया था. अब कंकाल को नया घर मिल गया है. वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय के क्यूरेटर महिंदर सिंह सुरेला ने बताया– कंकाल को गुरुवार शाम 6 बजे के आसपास संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया है. इसे एहतियाती बैरिकेड के साथ रिसेप्शन क्षेत्र के पास ग्राउंड फ्लोर पर रखा गया है. वर्तमान में, यह प्रदर्शन के लिए नहीं है. जैसे ही निर्देश प्राप्त होंगे, संरक्षण के दृष्टिकोण से कंकाल की जांच के बाद, इसे संग्रहालय की गैलरी में स्थानांतरित करने की योजना बनाई जाएगी.

साल 2023 से ही कंकाल को वडनगर के पुराने शहर के बाहरी इलाके में सरकारी आवास के खुले मैदान में 12:15 फीट के तिरपाल और कपड़े के तंबू के अंदर रखा गया था. इससे पहले इसे आवास की सीढ़ियों के नीचे गलियारे में रखा गया था.

अधिकारियों ने बताया– कंकाल को टेंट से बाहर निकालने के लिए क्रेन का इस्तेमाल किया गया. खुदाई स्थलों पर काम करने वाले 15 से ज्यादा एएसआई और राज्य सरकार के अधिकारियों की देखरेख में इसे एक ट्रेलर में ले जाया गया. इस प्रक्रिया में पांच घंटे से ज्यादा का समय लगा. 2019 में रेलवे लाइन के पार अनाज गोदाम से सटी बंजर जमीन से कंकाल की खुदाई की गई थी.

समाधि की स्थिति में कंकाल दफनाया

इससे पहले गुजरात के पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशक पंकज शर्मा ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया था– लोथल के संग्रहालय में भी कंकाल रखने पर विचार किया जा रहा है. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के वडोदरा सर्कल के पूर्व अधीक्षण पुरातत्वविद् अभिजीत आंबेकर, जो वडनगर उत्खनन से करीब से जुड़े थे, उन्होंने कहा था कि पिछले कई वर्षों में खोजी गई 9,000 से अधिक पुरावशेषों के साथ यह कंकाल गुजरात सरकार को सौंप दिया गया है. विशेषज्ञों का मानना छ्है कि यह कंकाल किसी ऐसे व्यक्ति का है जिसे बैठी हुई या 'समाधि' की स्थिति में दफनाया गया था, जो उस समय 'गुजरात में सभी धर्मों' में प्रचलित प्रथा थी.

पेपर में किया गया था इस कंकाल का जिक्र

हेरिटेजरू जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज इन आर्कियोलॉजी में प्रकाशित वडनगररू ए थ्राइविंग कम्पोजिट टाउन ऑफ हिस्टोरिकल टाइम्स शीर्षक वाले एक पेपर में आंबेकर और अन्य ने इस खोज का वर्णन कुछ इस प्रकार किया था– एक गड्ढे में क्रॉस–लेग्ड मुद्रा में बैठा हुआ एक अक्षुण्ण, अच्छी तरह से संरक्षित कंकाल. उत्तर की ओर मुख किए हुए सिर सीधा है, दाहिना हाथ गोद में रखा हुआ है.

धरती ही नहीं, इस प्लैनेट पर भी है जीवन, भारतीय वैज्ञानिक का बड़ा दावा

सबका जम्मू कश्मीर

सदियों से इंसान इस सवाल से जूझता आया है. क्या हम इस ब्रह्मांड में अकेले हैं? अब इस रहस्य पर से पर्दा उठता नजर आ रहा है. वैज्ञानिकों को पृथ्वी से सात सौ ट्रिलियन मील दूर स्थित एक ग्रह के2 –18बी नाम के प्लैनट से ऐसे संकेत मिले हैं, जो जीवन की संभावनाओं की ओर इशारा करते हैं. यह ग्रह पृथ्वी से ढाई गुना बड़ा है और इसके वातावरण की जांच कैम्ब्रिज विश्व. विद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम कर रही है.

के2 –18बी के वायुमंडल में वैज्ञानिकों को डाइमिथाइल सल्फाइड और डाइमिथाइल डाइसल्फाइड जैसे केमिकल एलिमेंट्स मिले हैं, जो आमतौर पर पृथ्वी पर केवल जीवित जीवा. ` , जैसे फाइटोप्लांकटन और बैक्टीरिया, द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं. हालांकि अभी इन संकेतों को अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता, लेकिन प्रमुख रिसर्चर प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का मानना है कि अगले एक या दो सालों में यह साबित किया जा सकेगा कि के2 –18बी पर जीवन की मौजूदगी संभव है.

इस ग्रह के वायुमंडल में अमो. निया की अनुपस्थिति ने भी वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा है. वैज्ञानिक मानते हैं कि के2 –18बी पर एक विशाल महासागर हो सकता है, जो अमोनिया को सोख रहा है. अमोनिया का पाया जाना आमतौर पर जीवन के लिए अहम संकेत होता है, इसलिए इसकी कमी से यह संभावना और मजबूत होती है कि ग्रह पर समुद्र जैसी जीवनदायी संरचना हो सकती है. हालांकि, यह भी संभव है कि सतह के नीचे लावा का महासागर हो, जो जीवन के लिए प्रतिकूल होगा.

अभी और सटीक जानकारी जुटाने की कोशिश

वैज्ञानिकों को के2 –18बी के वायुमंडल से अब तक 'तीन–सिग्मा' स्तर की पुष्टि मिली है. 'सिग्मा' वैज्ञानिक सटीकता को मापने का मानक है. आमतौर पर किसी खोज को पुख्ता कहने के लिए 'पांच–सिग्मा' की आवश्यकता होती है. हालांकि तीन–सिग्मा स्तर पर मिले संकेत इस दिशा में एक बड़ा कदम हैं, लेकिन वैज्ञानिक समुदाय को पूर्ण रूप से आश्वस्त करने के लिए अभी और सटीकता की दरकार है. प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का कहना है कि अगर के2 –18बी पर जीवन पाया जाता है, तो यह केवल एक ग्रह की कहानी नहीं होगी, बल्कि इससे पूरे ब्रह्मांड में जीवन की व्यापक संभावनाएं उजागर हो जाएंगी.

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

प्रकृति की खूबसूरीत का संकल्प है : बसंत ऋतु

बलविन्दर बालम

माघ शुक्ल पंचमी के दिन बसंत का जन्म हुआ था। बसंत पंचमी के दिन कला और संगीत की देवी सरस्वती की पूजा होती है। भ्व्य फूल, स्वस्थ फल लताएं बन्दनवार से ऋतु, रानी बसंत का अभिनंदन करती हैं। यह त्योहार में ऋतुओं की रानी बसंत के नेतृत्व की सूचना देता है।

बसंत फबीले मौसम का महामेला है। प्रकृति की खूबसूरती का संकल्प है बसंत। सुन्दर–सुन्दर खिलते फूलों को चूमते शवनम के कतरे ज़िंदगी के हकीकी जान पहचान करवाते नज़र आते हैं। खेता. ` में दूर–दूर तक सरसों की पीली सोने जैसी चमकती फसलें आँखों के लिए एक तंदरूस्त खुराक, भव्य नज़ारों की तृप्ति में बदलती है।

मौसम के खूबसूरत परिवर्तन का नाम है बसंत। सूर्य जब तड़क सवेरा लेकर सुन्दर प्रभा बांटता है तो मौसम की अंगड़ाई में सुरभियां

यार उड़ेलती हैं। लहलहाते हरे–भरे खेत, फूलों के रंगों की सुन्दर झलक, आमों के ऊपर पड़ा बूर किसी मतवाली कोयल का इकरार, मनमोहनी आवाज़ को तरसता है। फिर बसंत में रंग जाता है सारा संसार, काएनाता, समस्त मानवता।

तुर्ले वाली पीली पगड़ी, परिधान गुलाबी लाचा (तहमत), किसी मूंछ फूट जवान के गोरे–गोरे मुख पर तैरती सूर्य जैसी हंसी, हाथ में सुन्दर लाठी (खूंटा), गले में सफेद माला, छाती के ऊपर मचलता सोने का कैंठा (अलंकार), मुकम्मल सभ्याचार में बसंत का स्वरूप। लहलहाते खेतों में एक सुन्दर नारी, फिर के ऊपर पीला दुपट्टा घटाओं जेसा लहराता, पैरों में पाजेबों की पच–पज, लम्बे परादें वाली चोटी में सुसज्जित फुम्मन, मटक–मटक पब छोड़ती जाती जन्नत के बीच। बसंत की आमद का प्यार उमड़ता।

फसलें लहलहा कर हंसती जोबन (यौवन) ऋतु में। कोमल–कोमल शखाओं पर फूटते सूर्खआनार। मौसम का गुलावी रंग। सर्दी तथा गर्मी आपस में आँख मचोली खेलते हुए गर्मस्पर्शी मौसम के नाम पतझड़ क्रियाओं को अलविदा कहते हुए अतीत के पैरों में वर्तमान के अति सुन्दर चिन्ह छोड़ जाते। किसान–ज़िमींदार अपनी कमाई की खुशी के चिन्ह, जवान भरपूर खिली पक रही फसलों के सुनहरी दृश्य देखता हुआ, घरेलू मज़बूरियों तथा ऋण (कर्ज़) से निज़ात पाने की ललक में तत्पर होते हैं।

बसंत ऋतु सुन्दरता की असली परिभाषा तथा मौसम में कामोद दीपक होता है। इसके प्रमुख देवता काम तथा रति हैं। अतएव काम तथा रति के प्रधानतया पूजा करनी चाहिए। सरस्वती देवी विद्या, वृद्धि देती है। घरों में सरस्वती की पूजा की जाती है। इस दि नही हीरो तथा धमार गीत गाए जाते हैं गेहूं तथा जो की स्वर्णिम वालियां भवगान को अर्पित की जाती हैं। इन दिनों भगवती सरस्वती के पूजन की विशेष फल है। इस मौसम में कामोत्तेजना हृदय में जगा जाती है अभिलाषा। बागों में तितलियां, भंवरे, कोयलें, मोर, पपीहे, अन्य पक्षी उपवन से दिलकश कलोल करते हुए बसंत की बसंती बना देते हैं। भव्य फूल तथा कलियों के सफेद जिस्म बसंत ऋतु को दिव्यता बख्शते। पक्षियों की चहचहाटट, सूर्य की किरणों के साथ मानवता को प्रसन्नता का संदेश देती है। बसंत ऋतु में एकता, सद्भावना, नेतृत्व हृढ़ता, आपसी भाईचारे का संदेश देते हैं परवासी पक्षियों के झुंड। यही बसंत की खूबसूरती हैं।

शुभ–शकुन की पवित्र परम्परा है बसंत ऋतु। इस दिन सारी प्रकृति, काएनात तथा बनस्पति मानवता को सत्यम शिवम सुन्दरता का संदेश देती है।

निर्झर, नदी नालों में पानी की शुद्धता बड़ती हुई खुशहाली का संदेश देती है। पहाड़ों की खूबसूरती में बसंत की ऋतु दुल्हन जैसी सजती हुई जन्नत का आभास करवाती है। यह ऋतु मानव की खुशहाली की प्रतीक है। नील गगन की चूमती पहाड़ों की चोटियों के ऊपर खितली बंसत में तरह–तरह के फूलों की महक टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों की ज़िंदगी का नाम देती है। पहाड़ों की खूबसूरती में भी बसंत की ऋतु एक विलक्षण परिवर्तन करती है। बर्फ के घुलने से शुद्ध पानी अपनी परिवर्तनशीतला में नवीनता उत्त्पन्न करता है। निर्झरों का शुद्ध दुधिया पानी ऊपर से बहता हुआ नीचे जब धरती को चूमता है तो दर्पण की किरचियों जैसा टूट कर फैलता हुआ अनेक प्रतिबिम्ब उत्पन्न करता है जो जवानी, भव्यता और जन्नत का स्वरूप लेता है। इस दिन चारों और बसंती रंग की सुन्दरता बिखर जाती है।

बसंत ऋतु के सबंध में श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी में कहा है बनसपति मऊली चढ़िआ बसंत। ऐह मन मऊलिया सतिगुरू–संग। तुम साच ध्यावह मुगध मना। तां सुख पावहु मेरे मनां। यह पक्तियां जीवन के सुखद पलों की दर्शाती हैं। बनस्पति आने पर बसंत की आमद तथा सुख की प्राप्ति सतगुरू की उपासना से ही है।

भक्त कबीर जी अपनी बाणी में लिखते हैं मऊली धरती मऊलेआ आकास। घटि घटि मऊलेआ आतम प्रगास आदि।

श्री गुरु अर्जुन देव जी अपनी वाणी में कहते हैं तिस बसंत जिस प्रभु कृपाल। तिस बसंत जिस और दयाल।। मंगल तिसकै जिस एक नाम।। तिस सद बसंत जिस रिदै नाम।।2।। आदि।

श्री गुरू अमरदास जी लिखते हैं बसंत चढ़िआ फूली बनराय।। ऐह जीअ जंत फूलहि हरि चित लाए।।

आध्यात्मिक संदर्भ में आत्म विकास की अवस्था ही बसंत है जो गुरू कृपा से ही उपलब्ध है। इस दिन आसमान में पतंगे (गुड्डिया) तथा डोरे इस तरह पेचे लड़ाती हैं कि सारा आसमान ऐसे नज़र आता है जैसे किसी चित्रकार ने हवा में चित्रकारी कर रखी हो। रंग बरंगी पतंगों की खूबसूरती आसमान को सौंदर्य बख्शती है। आ–बो–ई–ओ की लम्बी ध्वनियां फिजा में जब गूंजती हैं तो जवानी की परिभाषा उपड़ती हैं। बसंत में बढ़ौतरी होती है।

बसंत वाले दिन सारे भारत में ही दीर्घ–लघु मेले, पतंगबाजी के लाखों के मुकाबले (प्रतियोगिता) होते हैं। विशेष तौर पर लखनऊ आदि शहरों में पतंगबा. जी की शत्रें लगती हैं। विशेष तौर पर पंजाब के अमृतसर में तथा फिरोजपुर आदि शहरों में पतंगबा. जी की शर्तें लगती हैं तथा देर रात तक पतंगों के पेचे चलते हैं। पतंगबाजी का त्यौहार भी इस दिन धूमधाम से मनाया जाता है। लड़कियां भी पतंगे उड़ाती हैं। माता–पिता अपनी प्यारी–प्यारी बेटियों को स्वंय पतंगे–डोर खरीद कर देते हैं तां जो लड़कियों में बराबरता का आत्म विश्वास बढ़े।

भाइ गुरदास जी ने जीवन से तशबीह (उपमा) देते हुउए अपनी कविता में पतंग (गुड्डी) के सबंध में कमाल का लिखा है।

पवन गवन जैसे लटूटा फिरत रहे, पवन रहित गुड्डी उड़ न सकत है।

डोरी को मरोर जैसे लटूआ फिरत रहै, ताऊ हाऊ गिर परै थकत है।।

कंचन असुध जिऊ कुठारी ठहगत नाही, शुद्ध भए निहचल छवि कै छकत है।

दुरमति दुविधा भ्रमत है चतुर कुंट, गुरू भति एक टेक मौन न बकत है।।

यह कविता मानव और प्रभु के सबंध है परन्तु गुड्डी की उदाहरण कमाल की है।

बसंत के दिन घरों–धार्मिक स्थानों, संस्थाओं आदि में पीले रंग का प्रसाद, पीले रंग के मीठे चावल बनाए जाते हैं। प्रत्येक शहर, नगर गांव में मेले लगते हैं। काम तथा रलि की प्रधानतया पूजा की जाती है। ब्रह्मा जी ने देवी से वीणा बजा कर संसार की भूकता तथा उदासी दूर की। देवी ने वीणा के मधुर नाद से सब जीवों को वाणी प्रदान की, इसलिए उस देवी को सरस्वती कहा गया। यह देवी विद्या, बुद्धि को देने वाली है। इसलिए बसंत के दिन घरों में सरस्वती की पूजा की जाती है।

यौवन हमारे जीवन का बसंत है तो बसंत इस सृष्टि का यौवन मानव को अपने अस्वस्थ देह को स्वस्थ बनाने के लिए प्रकृति के सान्निध्य में जाना चाहिए। प्रकृति सुख दुख के द्वनद्वों से परे है। इस में प्रभु की विधमानता संदेश भासती रहती है क्योंकि प्रभु–स्पर्श जीवन में सदैव एक ही ऋतु रहती है और वह है बसंत और प्रभु–स्पर्शी जीवन में एक ही अवस्था रहती है और वह है यौवन। प्रकृति के सम्मोहन में मानव के तन में स्फूर्ति, मन में उल्लास, बुद्धि में प्रसन्नता और हृदय में चेतना प्रगट होती है सृष्टि की सुन्दरता और यौवन की रसिकता का यहां सुमेल होता है, वहां निराशा, नीरसता, निश्क्रियता जैसी बातों का स्थान ही कहा? यही बसंत का वैभव है। बिना वर्षा के सृष्टि को पुन नवपल्लवित करने का प्रभु का चमत्कार बसंत में साकार होता दिखाई देता है। जीवन और बसंत को जिसने एक रूप कर दिया ऐसे मानव को हमारी संस्कृति में संत कहा गया है जो जीवन में बसंत लाए वही संत है।

यौवन औश्र सयम, आशा और सिद्धि और वास्तविकता जीवन और मौसम, भक्ति और शक्ति, सर्जन औश्र विसर्जन–इन सब में समन्वय करने वाला, जीवन में सौंदर्य, संगीत स्नेह निर्माण करने वाला बसंत हमारे जीवन में साकार बने, तभी हमने बसंत को जाना है, पाया और पचाया है – ऐसा कहा जाएगा। सम्भवतः इसी सार तत्व को जान कर बसंत पंचमी को श्री पंचमी भी कहा जाता है। श्री का अर्थ है शोभा, सौंदर्य, रमणीकता। यह यह बाहर तथा आन्तरिक दोनों में ही व्यक्त है। – इसी में जीवन की सार्थकता है।

बसंत में प्रदूषण दूर होता है। बसंत जीवन में हर्षोल्लास तथा आशाओं के गुलदस्ते लाती है। बच्चों में बसंत ऊर्जा, इच्छा शक्ति, खुशी की किलकारियां भरती हैं। बसंत प्रफुल्लता था ताजगी का संदेश देती है। भगवत गीता में अर्जुन से भगवान कृष्ण ने कहा था, मैं ऋतुओं में सबंत हूं। बसंत समता की पर्याय है। इस दिन बंगाल, उत्तरी भारत तथा बंगला देश में पीले तथा गुलाबी रंग में होली भी खेली जाती है।

इस दिन के साथ कई ऐतिहासिक घटनाओं का भी सम्बन्ध है। विशेष तौर पर वीर हकीकत राय की शहादत का। वीर शहीद हकीकत राय की समाधि बटाला (गुरदासपुर, पंजाब) में है यहां भारी मेला लगता है। नामधारी कूका लहर की कुर्वानियां, जरनैल शाम सिंह अटारी की शहीदी आदि घटनाएं तथा शुभकार्यों का भी इस के साथ सम्बंध है।

इस इिन धार्मिक स्थानों में कीर्तन, शब्द गायन तथा प्रवचनों का आयोजन भी किया जाता है।

विशेषतरू श्री हरि मन्दिर साहिब (श्री दरबार साहिब) अमृतसर, पंजाब में सारा दिन बसंत की स्तुति में शब्द गायन (कीर्तन) किया जाता है।

बसंत ऋतु समस्त ऋतुओं की महारानी है। मानवता के जीवन में इसकी महानता हृदय में उतरने वाली तथा शुद्धता, सुन्दरता, शान्ति तथा हर्षोल्लास की प्रतीक है।

बलविन्दर बालम गुरदासपुर
ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)
मोरू 9815625409

'विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक : स्वायत्तता से नियंत्रण की ओर उच्च शिक्षा का पुनर्गठन'

विक्रम सिंह

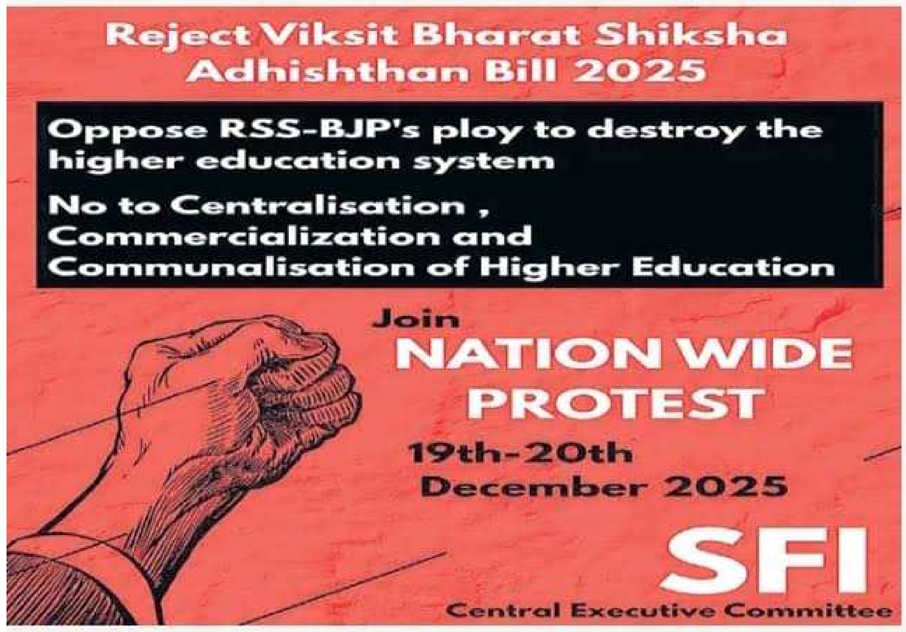

संसद के शीतकालीन सत्र में देश की सत्ता अपने मकसद में साफ़ और आक्रामक तरीके से आगे बढ़ी है। ऐसा लगता है, मानो शासक वर्ग ने ठान लिया हो कि अपने वर्गीय हितों के एजेंडे का एक हिस्सा इस वर्ष के ख़त्म होने से पहले ही लागू करना है। हालाँकि देश की जनता आशा लगाए बैठी थी कि प्रदूषण से लेकर एसआईआर तक संसद में चर्चा होगी, लेकिन भाजपा की प्राथमिकता देश की जनता तो कभी रही नहीं। इसलिए चर्चा एक खास मक़सद के साथ हुई राष्ट्र गीत पर। यह भी गौर करने वाली बात है कि यह सत्र बहुत छोटा था, लेकिन इसमें कई महत्वपूर्ण विधेयक आए, जो बिना किसी चर्चा या बहुत कम चर्चा के ही पारित हुए, जिनमें ग्रामीण मेहनतकशों के काम के अधिकार को खत्म करने के लिए विकसित भारत — रोज़गार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) विधेयक 2025 पारित किया गया। मज़दूरों के साथ ही देश के छात्रों पर भी तब बड़ा हमला हुआ, जब देश की उच्च शिक्षा के नियामक ढांचे को पूरी तरह से बदलने के लिए लोकसभा में 15 दिसंबर को विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान (वीबीएसए) विधेयक, 2025 लाया गया। हालांकि संसद के अंदर और बाहर बढ़ते प्रतिरोध को देखते हुए 15 दिसंबर को इस बिल को संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया गया।

'उच्च शिक्षा पर सीधा हमला'

इस विधेयक के माध्यम से सरकार का मकसद उच्च शिक्षा के व्यवसायीकरण के साथ–साथ, केंद्र सरकार के हाथों में सत्ता का असाधारण केंद्रीकरण है। हालांकि इसमें कुछ नया नहीं है। यह भाजपा नीत केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति–2020 में घोषित एजेंडे को आगे बढ़ाना ही है। भाजपा सरकार द्वारा देश के छात्रों पर थोपी गई नई शिक्षा नीति, 2020 में श्उच्चतर शिक्षा की नियामक प्रणाली में बदलावश के तहत चिंता जाहिर की गई है कि हमारे देश में उच्चतर शिक्षा का नियमन अत्यधिक सख्त और अप्रभावी रहा है, जिसमें कुछ निकायों में शक्ति के अत्यधिक केंद्रीकरण और आपसी हितों के संघर्ष के कारण जवाबदेही की गंभीर कमी बनी रही है।

इसके समाधान के तौर पर 18.2. में कहा गया है कि, "उपयुक्त मुद्दों को हल करने के लिए, उच्चतर शिक्षा की नियामक प्रणाली में यह सुनिश्चित करना होगा कि विनियमन, प्रत्यायन, फंडिंग और शैक्षणिक मानकों के निर्धारण जैसे विशेष कार्य, विशिष्ट, स्वतंत्र और सशक्त संस्थाओं/व्यवस्थाओं द्वारा संच. ालित किए जाएंगे। यह सिस्टम में चेक–एंड–बैलेंस बनाने, निकायों के आपसी हितों में टकराव को कम करने और कुछ निकायों में शक्तियों के अत्यधिक केंद्रीकरण को ख़त्म करने के लिए आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए चारों सांस्थानिक व्यवस्थाएं जो इन चार आधारभूत कार्यों को करती हैं, स्वतंत्र रूप से अपना काम करने के साथ–साथ साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तारतम्यता के साथ काम करें। इन चार संरचनाओं को एक प्रमुख संस्था, भारतीय उच्चतर शिक्षा आयोग (एचईसीआई) के तहत चार स्वतंत्र व्यवस्थाओं के रूप में स्थापित किया जाएगा।ष इसलिए यह विधेयक कोई अलग–थलग प्रयास नहीं है, बल्कि भाजपा सरकार के पूरी शिक्षा व्यवस्था को अपने केंद्रीय नियंत्रण में लेते हुए व्यावसायीकरण और सांप्रदायीकरण के अभियान का हिस्सा है। इस लेख में हम इस बिल के प्रावधानों और उच्च शिक्षा पर उसके प्रभाव को समझने का प्रयास करेंगे।

'क्या है इस विधेयक में?'

इस विधेयक के जरिये उच्च शिक्षा के नियमन के लिए एक नई व्यवस्था बनाना है। यह विधेयक एक आयोग के गठन का प्रावधान करता है, जिसका नाम शविकसित भारत शिक्षा अधिष्ठानश होगा। बिल की धारा–4 में घोषित उद्देश्यों के अनुसार, बिल का मकसद 'विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठानश नामक एक सर्वोच्च छतरी निकाय बनाना है, जो भारत में विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए नियमन, मान्यता और अकादमिक मानदंड सुनिश्चित करने के लिए तीन परिषदों के साथ, उच्च शिक्षा के व्यापक और समग्र विकास के लिए दिशा–निर्देश देगी'।

इसके क्या मायने है? अभी तक देश में उच्च शिक्षा के नियमन के लिए अलग संस्थाएं हैं, जैसे रू विश्व. विद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई), राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी — जो पहले मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता था), बार काउंसिल ऑफ इंडिया आदि, जो उच्च शिक्षा के अलग–अलग क्षेत्रों को नियंत्रित करती है। विक. सित भारत शिक्षा अधिष्ठान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई), और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) का स्थान लेगा और यह विधेयक इन निकायों के गठन से संबंधित तीनों कानूनों को निरस्त करता है।

'किन संस्थानों पर लागू होगा और नहीं होगा यह विधेयक?'

साधारण भाषा में समझें, तो इसके अंतर्गत सभी केंद्रीय विश्वविद्यालय और कॉलेज, शिक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक दायरे में कार्यरत राष्ट्रीय महत्व के सभी संस्थान, जिनमें आईआईटी, एनआईटी, आईआईएससी, आईआईएसईआर, आईआईएम और आईआईटीआई आदि हैं, शामिल होंगे। गौरतलब है कि अब तक, आईआईटी और आईआईएम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा विनियमित नहीं थे।

इसी धारा के अनुसार, विधेयक के प्रावधान फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया, बार काउंसिल ऑफ इंडिया, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद, पुनर्वास परिषद ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग, भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए राष्ट्रीय आयोग, होम्योपैथी के लिए राष्ट्रीय आयोग, संबद्ध एवं स्वास्थ्य देखभाल व्यवसायों के लिए राष्ट्रीय आयोग, राष्ट्रीय नर्सिंग एवं मिडवाइफरी आयोग,राष्ट्रीय दंत आयोग, तथा ऐसे अन्य कार्यक्रम, संस्थान, आयोग या परिषदें, जिन्हें केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाए, पर लागू नहीं होंगे।

'विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान आयोग'

इस विधेयक की धारा 5 में इस आयोग के गठन की रूपरेखा का प्रावधान किया गया है। आयोग के तहत तीन परिषदें काम करेंगी। इस आयोग में एक अध्यक्ष और 12 सदस्य होंगे। आयोग के सदस्यों में तीनों परिषदों के अध्यक्ष, केंद्र सरकार के उच्च शिक्षा सचिव, पांच प्रख्यात विशेषज्ञ और राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के दो प्रख्यात शिक्षाविद शामिल होंगे। आयोग के अध्यक्ष एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे, जिनकी नियुक्ति मानद क्षमता में की जाएगी। अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति केंद्र सरकार की अनुशंसाओं पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी।

आयोग के अंतर्गत तीन प्रमुख परिषदों का गठन किया जाएगा। 'पहली', विकसित भारत शिक्षा विनियमन परिषद, जो उच्च शिक्षा के लिए एक समान और केंद्रीय नियामक के रूप में कार्य करेगी। 'दूसरी', विकसित भारत शिक्षा गुणवत्ता परिषद्, जो उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रत्यायन (एक्रीडेशन) की संपूर्ण प्रणाली की देखरेख करेगी। और 'तीसरी', विकसित भारत शिक्षा मानक परिषद, जो शैक्षणिक मानकों के निर्धारण और उनके अनुपालन को सुनिश्चित करने का दायित्व निभाएगी।

परिषदों की संरचना के अनुसार, प्रत्येक परिषद का नेतृत्व एक अध्यक्ष करेगा तथा उसमें अधिकतम 14 सदस्य होंगे। परिषदों के अध्यक्ष उच्च शिक्षा या अनुसंधान के क्षेत्र के प्रतिष्ठित और प्रख्यात व्यक्ति होंगे, जिनके पास प्रोफेसर के समकक्ष न्यूनतम दस वर्षों का अनुभव होना अनिवार्य होगा। परिषदों के सदस्यों में प्रख्यात विशेषज्ञ, केंद्रीय उच्च शिक्षा विभाग द्वारा नामित एक सदस्य तथा अन्य दो परिषदों द्वारा नामित सदस्य शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, नियामक परिषद और मानक परिषद में राज्य सरकारों द्वारा बारी–बारी से एक–एक नामित सदस्य भी सम्मिलित किया जाएगा।

विधेयक की धारा 6 के अनुसार, आयोग के प्रमुख कार्यों में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के लिए रणनी. तिक दिशा प्रदान करना, उच्च शिक्षण संस्थानों को बड़े बहु–विषयक शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों के रूप में विकसित करने के लिए एक स्पष्ट रोडमैप तैयार करना, तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए नीतिगत और व्यावहारिक योजनाओं का सुझाव देना शामिल होगा। आयोग, परिषदों के बीच प्रभावी समन्वय सुनिश्चित करने के लिए उन्हें आवश्यक निर्देश दे सकेगा और उनके सुचारू संचालन हेतु वित्तीय सहायता भी प्रदान करेगा।

'वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था पर इस विधेयक का प्रभाव'

देश की स्वतंत्रता के बाद यह आम सहमति बनी थी कि उच्च शिक्षा एक सार्वजनिक हित का क्षेत्र है, और इसी समझ के तहत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) का उदय हुआ था। यह भी सच है कि यूजीसी में नौकरशाही जटिलताएँ तथा और भी कई तरह की अक्षमताएँ रही हैं, फिर भी उसकी एक वैधानिक जिम्मेदारी थी, वह केवल नियामक संस्था नहीं थी, बल्कि उच्च शिक्षण संस्थानों को अनुदान देने की बाध्यकारी भूमिका भी निभाती थी। यूजीसी एक संघीय ढाँचे के भीतर काम करती थी, जिसमें राज्य विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित थी, और वह विश्वविद्यालयों तथा प्रत्यक्ष कार्यकारी हस्तक्षेप के बीच एक सुरक्षात्मक दीवार के रूप में कार्य करती थी। इसके विपरीत, वीबीएसए विधेयक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसी नियामक संस्था स्थापित करता है, जिसकी कोई सार्वजनिक जवाबदेही नहीं है।

'संघीय ढांचे पर हमला'

जैसे कि ऊपर चर्चा की गई है, शिक्षा समवर्ती सूची में आती है। उच्च शिक्षा संस्थान, खासकर राज्य विश्वविद्यालय, अलग–अलग भाषाई, सामा. जिक और आर्थिक माहौल में काम करते हैं। इसी के आधार पर देश में उच्च शिक्षा केंद्र, राज्यों के बीच एक जटिल और बातचीत वाले रिश्ते से विक. सित हुई है, जिसे क्षेत्रीय इतिहास, भाषाई परंपराओं और सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताओं ने आकार दिया है। इस विधेयक का प्रस्तावित नियामक ढांचा इस विविधता को नई दिल्ली में बनाए गए एक समान राष्ट्रीय टेम्पलेट में बदलने की कोशिश है और केंद्र से थोपी गई इस नियामक एकरूपता से एक जैसे मॉडल को अपनाने की कोशिश में इस विविधता के खत्म होने का खतरा है।

यह विधेयक उच्च शिक्षा नियामक की पूरी प्रणाली को मज़बूती से केंद्र सरकार के अधीन कर देगा। आयोग और परिषदों के सदस्यों की नियुक्तियों में राज्य सरकारों की कोई संस्थागत भूमिका नहीं रहेगी। यदि हम इस बिल की धारा 45 और 47 को ध्यान से देखें, तो केंद्रीकरण और भी स्पष्ट हो जाता है। ये धाराएँ केंद्र सरकार को नीति–निर्माण का पूर्ण अधिकार देती हैं। इस विधेयक की धारा 45 (1) कहती है कि ष्इस अधिनियम के अंतर्गत अपने कर्तव्यों के निर्वहन में, इस अधिनियम के तहत गठित या स्थापित प्रत्येक निकाय केंद्र सरकार द्वारा समय–समय पर लिखित रूप में दिए गए नीति से संबंधित निर्देशों का पालन करने के लिए बाध्य होगाष।

'श्स्वायत्तता' के नाम पर केंद्र का रिमोट कंट्रोल'

यही नहीं, अगर किसी मामले पर यह असहमति होती है कि वह ष्पॉलिसीष है या नहीं, तो इसका फैसला केंद्र सरकार करेगी, और उसका फैसला अंतिम होगा और इस आयोग और उसके परिषदों पर अनिवार्य तौर पर लागू होगा। विधेयक की धारा 45 (2) प्रावधान करती है कि, ष्यदि केंद्र सरकार और इस अधिनियम के तहत गठित या स्थापित किसी भी निकाय के बीच इस बात को लेकर कोई मतभेद उत्पन्न होता है कि कोई प्रश्न नीति से संबंधित है या नहीं, तो इस संबंध में केंद्र सरकार का निर्णय अंतिम होगाष। इसी विधेयक में धारा 45 (3) निर्देशित करती है कि केंद्र सरकार आयोग या परिषदों को ऐसे अन्य कार्य करने का निर्देश दे सकती है, जिन्हें वह उपयुक्त समझे। इसका मतलब है कि सरकार के स्वायत्तता के सारे दावे खोखले है। विधेयक के उपरोक्त प्रावधान साफ़ दर्शातें है कि केंद्र सरकार के निर्णय ही इस आयोग को लागू करने होंगे।

यह केवल निर्णय थोपने तक सीमित नहीं है, बल्कि जब केंद्र सरकार को महसूस होगा कि यह आयोग, सरकार के रिमोट कंट्रोल के आदेशों के अनुसार काम नहीं कर रहा है, तो इस विधेयक के अनुसार उसके पास आयोग को हटाने की शक्तियां हैं। इस विधेयक की धारा 47 (1) के अनुसार,

■ शेष पेज 6...

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

शेष पेज 5 से...

ष्यदि किसी भी समय केंद्र सरकार की यह राय बनती है कि –– (क) आयोग या कोई भी परिषद इस अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत उस पर लगाए गए कार्यों और दायित्वों का निर्वहन करने में असमर्थ है ; या (ख) इस अधिनियम के अंतर्गत स्थापित आयोग या परिषद, जैसा भी मामला हो, ने केंद्र सरकार द्वारा इस अधिनियम के तहत दिए गए किसी निर्देश का पालन करने में या इस अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत उस पर लगाए गए कार्यों और दायित्वों के निर्वहन में लगातार चूक की है ; तो केंद्र सरकार, भारत के राष्ट्रपति की पूर्व स्वीकृति से, राजपत्र में प्रकाशित आदेश द्वारा, आयोग या परिषदों (जैसा भी मामला हो) को ऐसे समयावधि के लिए, जो छह माह से अधिक न हो, जैसा कि आद.`श में निर्दिष्ट किया जाए, निलंबित (सुपरसिड) कर सकती है।ष

दरअसल नियामक स्वतंत्रता विश्वसनीय शैक्षणिक शासन की एक बुनियाद है। कभी–कभी कई मुद्दों पर उसका सरकार के साथ मतभेद भी हो सकता है। सामान्यतया, सरकार उसे सलाह भी देती है और नियामक आयोग भी सरकार को कई तरह की सिफारिशें भी कर सकता है। लेकिन जब सरकार की सभी राय आयोग पर बाध्यकारी होगी और न मानने की स्थिति में सरकार उसे बर्खास्त कर सकती है, तो नियामक संस्था का मूल कार्य, जो स्वायत्तता पर आधारित है, प्रभावित होगा।

''भारतीयकरण' के नाम पर हिंदुत्व का एजेंडा'

इसके अलावा नई शिक्षा नीति के एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए इसमें भारतीय ज्ञान, भाषाओं तथा कलाओं को बढ़ावा देने की बात की गई है। इस विधेयक की धारा 9 में आयोग के कार्यों का प्रावधान किया गया है, जिसमे उपधारा (घ) कहती है कि बहु–विषयक उच्च शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत भारतीय (भारतीय) ज्ञान, भाषाओं और कलाओं के एकीकरण एवं संवर्धन के लिए रोडमैप तैयार करना; और (ज) कहती है कि छात्रों के सीखने के अनुभवों को समृद्ध करने और अधिगम परिणामों को प्राप्त करने के उद्देश्य से भारतीय ज्ञान, कलाओं और भाषाओं के संवर्धन हेतु शिक्षा का भारतीयकरण करना। हम जानते हैं कि किसी भी देश का पारंपरिक ज्ञान और भाषाओं को वहां शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए, लेकिन भाजपा काल में भारतीय ज्ञान के मायने भी बदल जाते हैं। भाजपा काल में केवल एक धर्म से संबंधित भाषा, ज्ञान और कला ही देश पर थोपे जा रहे हैं। इसका एक छोटा, परन्तु बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण है, एक बहुभाषीय देश पर हिंदी भाषा की शब्दावली में बनाया गया विधेयक थोपना। हिंदी में लिखे जा रहे इस लेख में इस पर चर्चा करना ज्यादा आवश्यक हो जाता है कि इस देश में कोई एक भाषा सभी पर नहीं थोपी जानी चाहिए, चाहे यह हिंदी ही क्यों न हो। दरअसल यह केवल हिंदी नहीं, बल्कि बहुसंख्यकों की प्रचलित भाषा को थोपना है।

'ग्रेडेड ऑटोनॉमी रू स्वायत्तता या निजीकरण का दूसरा नाम?'

इसके अलावा इस विधेयक में ग्रेडेड ऑटोनोमी पर विशेष जोर दिया गया है। ग्रेडेड ऑटोनोमी के बारे में हम नई शिक्षा नीति की समीक्षा के समय काफी चर्चा कर चुके हैं। इस ग्रेडेड ऑटोनोमी के परिणाम पूरे देश में पहले से ही दिख रहे हैं। वैसे इनकी समझ के अनुसार संस्थानों की स्वायत्तता, उनके द्वारा शैक्षणिक तथा अन्य निर्णय लेना नहीं है, बल्कि केवल वित्तीय स्वायत्तता है, जिसके तहत आपको अपने संसाधन खुद जुटाने हैं। इसका सीधा मतलब है फीस में बढ़ौतरी और स्व–वित्तपोषित कोर्स शुरू करना। स्वायत्तता के सही मायने हैं सिंडिकेट्स, कार्यकारी परिषद् और अकादमिक परिषद् द्वारा शिक्षण संस्थानों से जुड़े निर्णयों को लेना जो उनकी भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों के अनुसार होंगे। इन निर्णायक संस्थाओं में छात्रों, शिक्षकों और गैर–शिक्षण कर्मचारियों के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं। लेकिन इस विधेयक में, नई शिक्षा नीति की तरह ही, कहीं पर भी छात्रों, शिक्षकों और गैर–शिक्षण कर्मचारियों के प्रतिनिधियों का नीति निर्धारण या निर्णय लेने में किसी तरह की भूमिका का कोई प्रावधान नहीं है।

उच्च शिक्षा का केन्द्रीयकरण और यूजीसी को खत्म करने का प्रयास कोई नई बात नहीं है। इससे पहले यूपीए सरकार और बाद में भाजपा सरकार द्वारा भी ऐसे प्रयास किए गए थे। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा और अनुसंधान परिषद का प्रस्ताव शिक्षा जगत के व्यापक विरोध के कारण संप्रग सरकार को ख़ारिज करना पड़ा था। इसके बाद भाजपा सरकार ने उच्च शिक्षा सशक्तिकरण नियामक एजेंसी का प्रस्ताव रखा और 2018 में भारतीय उच्च शिक्षा आयोग लाने की बात की, जिसका उद्देश्य यूजीसी और एआईसीटीई को बदलना था। सरकार की इस कोशिश को हर तरफ से आलोचना का सामना करना पड़ा था और वह आगे नहीं बढ़ पाई। यह विचार राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान का भी एक प्रमुख हिस्सा था। यह मांग असल में भारतीय कॉर्पोरेट घराने और विदेशी पूँजी काफी समय से करती आई है, ताकि उच्च शिक्षा का पूरा नियंत्रण केंद्र के हाथों में चला जाये, जिससे उन्हें तथाकथित भारतीय उच्च शिक्षा में अनाप–शनाप तरीके से अरबों रुपये के मुनाफाखोरी करने की खुली छूट मिल जाये।

कुल मिलाकर विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक, भारतीय उच्च शिक्षा में एक बुनियादी संरचनात्मक बदलाव को दर्शाता है रू एक ऐसा तंत्र, जो सार्वजनिक जवाबदेही और सामाजिक दायित्व पर आधारित था, उसे एक केंद्रीकृत, तकनीकी–नौकरशाही और बाज़ार–अनुकूल शासन मॉडल में बदलना। स्वायत्तता, उत्कृष्टता और सुधार की कथित भाषा के पीछे यह विधेयक संघवाद को कमजोर करता है, लोकतांत्रिक भागीदारी को हाशिये पर डालता है और शिक्षा को माल में बदलने की प्रक्रिया को और गहरा करता है। सार्वजनिक उच्च शिक्षा को सशक्त करने के बजाय, यह ढांचा विश्व. विद्यालयों को ऐसे विनियमित सेवा–प्रदाताओं में बदलने का जोखिम पैदा करता है, जो समाज, छात्रों और संविधान के प्रति जवाबदेह होने के बजाय मान्यता–सूचकांकों और केंद्रीय सत्ता के प्रति अधिक उत्तरदायी होंगे। इसलिए इस विधेयक का हर स्तर पर, हर संभव तरीके से विरोध जरूरी है।

'(लेखक एसएफआई के पूर्व महासचिव तथा वर्तमान में अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन के संयुक्त सचिव हैं। संपर्क रू 94184–84418)'

जिला कठुआ के हीरानगर में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी ने किया 'मनरेगा बचाओ संग्राम' व 'हमारी रियासत हमारा हक़' कार्यक्रम का आयोजन

सबका जम्मू कश्मीर

हीरानगर, कठुआरू जिला कठुआ की ब्लॉक कांग्रेस कमेटी हीरानगर द्वारा आज हीरानगर में 'मनरेगा बचाओ संग्राम' एवं 'हमारी रियासत हमारा हक़' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य मनरेगा योजना को मजबूत करने, मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करने तथा जम्मू–कश्मीर के लोगों के संवैधानिक और लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना रहा।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने मनरेगा में हो रही कथित अनदेखी, मज़दूरी भुगतान में देरी और काम के अवसरों में कमी जैसे मुद्दों को उठाया। साथ ही उन्होंने कहा कि जनता के हक़ और अधिकारों की रक्षा के लिए कांग्रेस पार्टी सड़क से सदन तक संघर्ष जारी रखेगी।

इस अवसर पर पार्टी कार्यकर्ता, स्थानीय नेता और बड़ी संख्या में आम लोग मौजूद रहे, जिन्होंने एकजुट होकर अपने अधिकारों के समर्थन में आवाज़ बुलंद

इस मौके पर पूर्व मंत्री चौधरी लाल सिंह, पूर्व एमएलसी सुभाष गुप्ता, कांग्रेस जिला प्रधान पंकज डोगरा, पूर्व सरपंच राकेश चौधरी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे

वन महोत्सव के तहत नगरी में कार्यक्रम आयोजित, लोगों को किया गया पौधरोपण के लिए जागरूक

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी, कठुआ। जम्मू–कश्मीर के जिला कठुआ के नगरी क्षेत्र में वन महोत्सव के अवसर पर वन विभाग द्वारा एक व्यापक जन–जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना और अधिक से अधिक वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को पेड़ लगाने के महत्व, लगाए गए पौधों की देखभाल और उनकी सुरक्षा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। वन विभाग के अधिकारियों ने अपने संबोधन में कहा कि बदलते समय के साथ पर्यावरण में तेजी से परिवर्तन हो रहा है, जिसका सीधा प्रभाव मानव जीवन पर पड़ रहा है। बढ़ता तापमान, अनियमित वर्षा, जल संकट और प्रदूषण जैसी समस्याएं आज गंभीर रूप ले चुकी हैं। ऐसे में पेड़–पौधे ही पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का सबसे प्रभावी साधन हैं। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि वृक्ष न केवल हमें शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि मिट्टी संरक्षण, जल संरक्षण और जैव विविधता को बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान लोगों से अपील की गई कि प्रत्येक नागरिक कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाए और उसकी जिम्मेदारी स्वयं ले। इससे न केवल हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित किया जा सकेगा। वक्ताओं ने कहा कि यदि समाज का हर व्यक्ति इस दिशा में छोटा सा प्रयास भी करे, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे क्षेत्र और देश पर पड़ेगा।

इस अवसर पर कठुआ वन विभाग के रेंजर, विभाग के अन्य कर्मचारी, नगर पालिका समिति नगरी के पूर्व प्रधान तरसेम पाल सैनी, दिलीप मेहता, नगरी व्यापार मंडल के प्रधान पिंकू, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पवन सिंह ललोतरा सहित क्षेत्र के कई गणमान्य नागरिक और युवा मौजूद रहे। सभी वक्ताओं ने एक स्वर में पर्यावरण संरक्षण को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए लोगों से हरियाली बढ़ाने और प्रकृति की रक्षा के लिए सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की।

कठुआ में खैर पेड़ों की कटाई वैध, भ्रामक सूचनाओं से दूर रहें : वन विभाग

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ, 16 जनवरी। कठुआ वन प्रभाग ने खैर पेड़ों की कटाई को लेकर फैल रही भ्रामक सूचनाओं का खंडन करते हुए स्पष्ट किया है कि जसरोता रेंज के गांव चिलिक और सेस्वान में निजी भूमि पर की जा रही खैर पेड़ों की कटाई पूरी तरह वैध और विधिवत अनुमति के तहत की जा रही है।

वन विभाग के अनुसार यह कटाई एसआरओ–111 (2016), स्वीकृत खैर प्रबंधन योजना तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आद.`शों के अनुरूप की जा रही है। विभाग ने बताया कि निजी भूमि पर उग रहे खैर पेड़ों की कटाई पर लगा प्रतिबंध केंद्रीय सशक्त समिति की सिफारिशों के आधार पर हटाया गया था।

प्रभागीय वन अधिकारी ने जानकारी दी कि यह प्रक्रिया 10 वर्षीय कटाई चक्र के तहत वर्ष 2025–26 के लिए अनुमोदित है। कटाई कार्य निर्धारित नियमों और शर्तों के अनुसार किया जा रहा है तथा इसकी निगरानी राजस्व विभाग, वन विभाग और पुलिस विभाग की संयुक्त टीमों द्वारा की जा रही है, ताकि पारदर्शिता और जवाबदे. ही सुनिश्चित हो सके।

वन विभाग ने आम जनता से अपील की है कि वे सोशल मीडिया या अन्य अनधिकृत स्रोतों से फैल रही अप्रमाणित सूचनाओं पर विश्वास न करें और केवल अधिकृत जानकारी पर ही भरोसा करें। किसी भी प्रकार की शिकायत या अप्रिय घटना की स्थिति में संबंधित विभाग को सूचित करने को कहा गया है।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर
संपादकीय

कर सुधार रणनीति

संपादक – राज कुमार

भारत में अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था के विकास ने 1 जुलाई 2017 को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के लागू होने के साथ एक ऐतिहासिक मोड़ लिया। यह सुधार देश के आर्थिक इतिहास के सबसे व्यापक और महत्वाकांक्षी नीतिगत परिवर्तनों में से एक था। जीएसटी से पहले भारत की कर संरचना बिखरी हुई था, जिसमें केंद्र और राज्यों द्वारा लगाए जाने वाले उत्पाद शुल्क, सेवा कर, वैट, एंट्री टैक्स जैसे अनेक कर शामिल थे। इससे करों का दोहराव, लागत में वृद्धि, जटिलता और पारदर्शिता की कमी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती थीं। जीएसटी ने इन सभी करों को समाहित कर एक एकीकृत, गंतव्य–आधारित कर प्रणाली स्थापित करने का प्रयास किया, जिससे एक समान राष्ट्रीय बाजार की परिकल्पना साकार हो सके। जीएसटी का मुख्य उद्देश्य आर्थिक दक्षता बढ़ाना, कारोबार को सरल बनाना और राज्यों के बीच कर बाधाओं को समाप्त करना था। इसी सुधार प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने सितंबर 2025 में जीएसटी रिफॉर्म्स 2.0 लागू किए। इन सुधारों का प्रमुख लक्ष्य कर ढांचे को सरल बनाना और उन क्षेत्रों को राहत देना था, जो अमेरिका द्वारा लगाए गए ऊंचे आयात शुल्क से प्रभावित हुए थे। इस पुनर्गठन के तहत चार जटिल टैक्स स्लैबकृ5, 12, 18 और 28 प्रतिशतकृको समाप्त कर दो प्रमुख स्लैब 5 प्रतिशत (मेरिट रेट) और 18 प्रतिशत (स्टैंडर्ड रेट) किए गए। साथ ही तंबाकू, शक्करयुक्त पेय, महंगी कारें, यॉट और निजी विमान जैसे विलासिता एवं हानिकारक उत्पादों पर 40 प्रतिशत की दर बनाए रखी गई। इस सुधार के पीछे यह धारणा रही कि जीएसटी दरों में कटौती से बिक्री लागत घटेगी, नकदी प्रवाह में सुधार होगा और कार्यशील पूंजी पर दबाव कम होगा। परिणामस्वरूप खुदरा खपत में वृद्धि होगी और श्रम–प्रधान उद्योगों, एमएसएमई, वस्त्र तथा ऑटोमोबाइल क्षेत्रों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। सीमेंट पर कर 28 से घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया, वहीं छोटे वाहन, दोपहिया, बस, ट्रक और एंबुलेंस भी 18 प्रतिशत स्लैब में लाए गए। स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े उत्पादों, जैसे जीवनरक्षक दवाएं और अध्ययन सामग्री, पर 5 प्रतिशत या शून्य कर लगाया गया, जबकि आवश्यक खाद्य पदार्थों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं पर न्यूनतम कर रखा गया। मैक्रो स्तर पर देखें तो वित्त वर्ष 2024–25 में जीएसटी संग्रह 22.08 लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया और करदाताओं की संख्या 66 लाख से बढ़कर 1.5 करोड़ हो गई। यह जीएसटी की बढ़ती स्वीकार्यता और प्रभावशीलता को दर्शाता है। हालांकि, इसी दौरान अमेरिका द्वारा अगस्त 2025 में भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत टैरिफ बढ़ाने की घोषणा ने भारत के निर्यात क्षेत्र के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर दी। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और इस फैसले से इंजीनियरिंग, वस्त्र, रत्न और फार्मा जैसे क्षेत्रों पर नकारात्मक असर पड़ने की आशंका है। ऐसे समय में जीएसटी रिफॉर्म्स 2.0 घरेलू अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने का एक प्रभावी साधन बनकर उभरे हैं। जहां विदेशी बाजारों में भारतीय उत्पादों की कीमतें बढ़ेंगी, वहीं घरेलू स्तर पर कर कटौती से लागत घटेगी और प्रतिस्पर्धात्मकता बनी रहेगी। पीएचडी चौंबर और वित्त मंत्रालय के अनुमानों के अनुसार, कुछ क्षेत्रों में नुकसान के बावजूद घरेलू उत्पादन और खपत में वृद्धि से कुल प्रभाव संतुलित हो सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि जीएसटी सुधार निर्यात नुकसान की पूरी भरपाई भले न कर पाए, लेकिन यह एक रणनीतिक घरेलू प्रोत्साहन प्रदान कर अर्थव्यवस्था की मजबूती और लचीलापन सुनिश्चित करता है।

विदेशी आक्रांताओं के शुभचिंतकों को सनातन भूमि में रहने का हक नहीं, समझे सरकार! करे कार्रवाई!

कमलेश पांडे

सनातन भूमि भारतवर्ष, जिसे जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, आसेतु हिमालय आदि विभिन्न नामों से पुकारा गया है, में मुस्लिम आक्रमणकारियों और ब्रिटिश आततायी अधिकारियों के महिमामंडन का जो सियासी होड़ जब–तब मची रहती है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। सवाल है कि इनसे जुड़े विभिन्न प्रतीक चिन्हों–स्मारकों आदि, इनके नाम पर बसाए गए गांवों–शहरों, नामांकित सड़कों या विभिन्न संस्थानों को मिटा क्यों नहीं दिया जाता, क्योंकि ये सनातन भूमि पर रिसते घाव की मानिन्द हैं।

यक्ष प्रश्न यह भी है कि आज इनकी जरूरत क्या है, किनको है और क्यों है? और यदि है तो फिर ऐसे देशद्रोहियों की यहां जरूरत है? यदि बाबर, अकबर, औरंगजेब जैसे क्रूर मुस्लिम शासकों या जनरल डायर जैसे क्रूर ब्रिटिश अधिकारियों या फिर ओसामा बिन लादेन, कसाब जैसे क्रूर आतंकवादियों का, पाकिस्तान–बंगलादेश जैसे फिरकापरस्त ताकतों के शुभचिंतक यहां हैं तो भारतीय प्रशासन का यह पहला कर्तव्य है कि राष्ट्रहित में इनकी शिनाख्त करे और इन्हें राष्ट्रीय सीमा से बाहर करे।

यह अहम बात है कि जब तक ये बाहर नहीं हो जाते, तबतक इनको मताधिकार और राष्ट्रीय जनसुविधाओं से वंचित किया जाए। इनके भारतीय पहचान पत्र निरस्त किये जाएं। क्योंकि सुलगता सवाल है कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में जब कोई नेता या बुद्धिजीवी सिर्फ मजहबी कारणों से जुल्मियों का महिमामंडन करने का दुस्साहस करे, तो इनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करना भारतीय प्रशासन का पहला कर्तव्य होना चाहिए। क्योंकि इस पवित्र हिन्दू भूमि पर ऐसा करते रहने की इजाजत किसी को नहीं दी जा सकती है! ऐसे देशद्रोही, सनातन द्रोही तत्वों के खिलाफ भारतीय नेताओं और प्रशासन को कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। इस दिशा में कोई लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, अन्यथा इनके हौसले बढ़ेंगे।

कहना न होगा कि जब हम इंडिया कहते हैं तो उसका अभिप्राय अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत, वर्मा, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव समेत भारत के उस विशाल भूभाग से लिया जाता है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के रूप में सुप्रसिद्ध हिन्दू भूमि है। यदि आप महाभारत को पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि यह पूरी दुनिया ही सनातनी थी, देवत्व मिजाजी थी और जो दानव या असुर मिजाजी थे, वो हिंदुओं से अलग होते गए। फिर भी आर्यावर्त में हिंदुत्व का दबदबा हमेशा बना रहा। इसलिए चाहे मुस्लिम आक्रमणकारियों का जत्था रहा हो या ब्रिटिशर्स ईसाइयों की फौज और उससे जुड़े लोग, जो यहां पर विदेशी आक्रमणकारी बनकर आए, यहां के शांतिप्रिय लोगों पर जुल्म ढाए और फिर यहीं रच–बस गए हैं। इन्होंने हथियार के बल पर धर्मांतरण कराया और सनातन मंदिरों उनके संरक्षक रजवाड़ों को नष्ट किया।

चूंकि ये सभी बाहरी आक्रांता हैं, मंगोल या अरब से आये हैं, इसलिए इनकी असली जगह इनके मूल देशों में है, न कि सनातन भूमि में! क्योंकि इनकी सहानुभूति भारत से नहीं, बल्कि उन्हीं मुल्कों से है। हिंदुओं के नाम पर देश विभाजन करके फिर से भारत में फिरकापरस्त सियासत को बढ़ावा देना, वैसे ही संविधान का निर्माण करवाना कांग्रेस की ऐसी गलती रही है, जिसकी सजा उसे हिन्दू समाज देता आया है। क्योंकि आजादी के बाद मुसलमानों और ईसाइयों को देश से बाहर करवाना, उनसे जुड़ी स्मृतियों को समाप्त करना और भारतीय शासकों, ऋषियों–मुनियों और देवताओं की स्मृतियां कायम करवाना उसका दायित्व था, लेकिन उसने धर्मनिरपेक्षता और गंगा–यमुना संस्कृति के नाम पर हिन्दू समाज को धोखा दिया।

ऐसा इसलिए कि सनातन भूमि, देव भूमि समझी जाती है। यही ऋषियों–मुनियों की तपोभूमि है। यह अहिंसक भूमि है। जबकि मुस्लिमों–ईसाइयों का स्वभाव ही हिंसक है। ये लोग मांसभक्षी हैं और क्रूर भी होते हैं। इनके राजकाज वश, इनके संसर्ग में रहने वाले हिन्दू भी वैसे ही हो गए, जैसे ये हैं। इन्होंने फुट डालो और शासन करो की नीतियों से हिंदुओं में सामाजिक व जातीय दुर्भावना को जन्म दिया है।आधुनिक संवैधानिक व्यवस्था भले ही ऐसे तत्वों को धर्मनिरपेक्ष कहती है। लेकिन सदियों से इनका जो स्वभाव रहा है, लड़ाई–झगड़े, दंगा–फसाद की जो नियति रही है, उसके दृष्टिगत तो यही कहना उचित रहेगा कि इन्हें या तो खुद को बदलने का अवसर दिया जाए या फिर भारतीय उपमहाद्वीप से निकाल बाहर किया जाए। बदलते वक्त की मांग है कि सनातन भूमि की नैसर्गिक जरूरतों के मद्देनजर भारतीय संविधान का पुनर्निर्माण हो। इससे पहले कोई इतना मजबूत शासक बने, जो अखण्ड भारत का निर्माण करे। साथ ही आसेतु हिमालय में रच–बस चुके सनातन द्रोहियों को हृदय परिवर्तन, स्वभाव और संस्कार परिवर्तन यानी धर्मपरिवर्तन कर हिंदुओं में शामिल होने का अवसर दे, अन्यथा जिद्दी बनकर अपने धर्म पर अडिग रहने वालों को उसी प्रकार से आसेतु हिमालय यानी भारतीय उपमहाद्वीप से निकाल बाहर करे जैसे कि अमेरिका अपने यहां के अवैध प्रवासियों को कर रहा है।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि मुस्लिम और ईसाई आदि रह तो रहे हैं भारतीय उपमहाद्वीप में, लेकिन यशोगान करते फिरते हैं अरब और ईसाई देशों का। भारतवर्ष पर शासन करने वाले क्रूर शासकों या अधिकारियों का। खासकर सियासत में तो इनका यशोगान करने वालों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाना चाहिए। आज देश में जिस क्रूर बादशाह औरंगजेब, जो अपने पिता और भाइयों का नहीं हुआ, को लेकर राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप तेज हो चुके हैं। ऐसे में औरंगजेब के उस आखिरी खत की चर्चा यहां मुनासिब है, जो खोल देगा उसका महिमामंडन करने वालों का दिमाग। क्योंकि औरंगजेब के उस आखिरी खत का जिक्र इतिहास की किताबों में हुआ है। इसमें औरंगजेब अपने पापों की कहानी खुद कहता है। विवादास्पद मुगल शासक ने अपनी मृत्यु से पहले के पछतावे में अपने किये गुनाहों का जिक्र किया है। प्रख्यात इतिहासकार राम कुमार वर्मा की लिखी किताब श्औरंगजेब की आखिरी रातश में उस खत का मजमून दिया गया है। उसे आपको पढ़ना इसलिए जरूरी है ताकि मुंबई के समाजवादी पार्टी विधायक अबू आजमी ने औरंगज़ेब का जो महिमामंडन किया है और उस पर विवाद बढ़ा है, उसकी असली हकीकत आप भी जान लें।

इतिहास के पन्नों में देखेंगे तो पाएंगे कि विवादास्पद मुगल शासकों में सबसे बड़ा नाम औरंगजेब का है। जिसने ने गैर–मुसलमानों पर जजिया कर जैसी भेदभावपूर्ण नीतियां लागू कीं। उसने सिखों के गुरु तेग बहादुर का सिर कलम करवा दिया था। उसने गुरु गोविंद सिंह के बेटों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया। उसने छत्रपति शिवाजी के पुत्र संभाजी महाराज की आंखें फोड़ दीं और नाखून उखाड़ लिए। इसके शासन काल में भारत में शरियत के आधार पर फतवा–ए–आलमगीरी लागू किया और बड़ी संख्या में हिंदू मंदिरों को नष्ट कर दिया गया। उसने काशी विश्वनाथ और सोमनाथ मंदिरों को नष्ट करवाया और लाखों हिंदुओं की हत्या करवाई। इसकी क्रूरता के कारण करीब–करीब पूरे भारतीय उपमहादीप में मुगल साम्राज्य अपना सबसे ज्यादा विस्तार कर पाया। औरंगजेब की मृत्यु 1707 ईस्वी में हुई थी।

कहा जाता है कि मौत से पहले इसको अपने किये गुनाहों पर पछतावा था। औरंगजेब ने अपने बेटों, आजम शाह और काम बख्श को अपने खेद व्यक्त करने के लिए पत्र लिखे थे। इन पत्रों में उसने अपने पापों और असफलताओं के बारे में जिक्र किया था। औरंगजेब ने अपने आखिरी पत्र में जो लिखा था, वह उसके पछतावे की कहानी है। औरंगजेब ने मरने से पहले अपने बेटों को लिखी एक चिट्ठी में अपने पापों का जिक्र किया था। इस चिट्ठी में उन्होंने लिखा था कि उन्होंने लोगों का भला नहीं किया और उनका जीवन निरर्थक बीत गया। उन्होंने यह भी लिखा था कि उन्हें अपने पापों का परिणाम भुगतना होगा।

प्रख्यात इतिहासकार राम कुमार वर्मा की लिखी किताब 'औरंगजेब की आखिरी रात' में औरंगजेब के खत के मजमून का कुछ यूं जिक्र किया गया है–. ष्अब मैं बूढ़ा और दुर्बल हो गया हूं। मैं नहीं जानता मैं कौन हूं और इस संसार में क्यों आया? मैंने लोगों का भला नहीं किया, मेरा जीवन ऐसे ही निरर्थक बीत गया! भविष्य को लेकर मुझे कोई उम्मीद नहीं है, मेरा बुखार अब उतर गया है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि शरीर पर केवल चमड़ी बची हो। दुनिया में कुछ लेकर नहीं आया था, लेकिन अब पापों का भारी बोझ लेकर जा रहा हूं! मैं नहीं जानता कि अल्लाह मुझे क्या सजा देगा, मैंने लोगों को जितने भी दुख दिए हैं, वो हर पाप जो मुझसे हुआ है उसका परिणाम मुझे भुगतना होगा। बुराईयों में डूबा हुआ गुनाहगार हूं मैं।" गौरतलब है कि औरंगजेब के पिता शाहजहां थे। औरंगजेब ने अपने पिता पर भी काफी जुल्म किये थे। औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को आगरा के किले में कैद करके रखा और उन्हें पानी के लिए तरसाया था। शाहजहां ने अपनी आत्मकथा 'शाहजहांनामा' में औरंगजेब के लिए बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग किया था। शाहजहां ने लिखा कि खुदा करे कि ऐसी औलाद किसी के यहां पैदा ना हो। शाहजहां ने औरंगजेब को उन हिंदुओं से सीख लेने की बात कही, जो अपने माता–पिता की सेवा ताउम्र करते हैं और उनकी मृत्यु के बाद जल से तर्पण करते हैं। उन्होंने लिखा है कि औरंगजेब से अच्छे तो हिंदू हैं, जो अपने माता–पिता की सेवा करते हैं और उनकी मृत्यु के बाद तर्पण करते हैं। यही वजह है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंता विश्वशर्मा आदि ने औरंगजेब की महानता का गुणगान करने वाले सपा नेता अबू आजमी और उनके पक्षधरों की बखिया उधेड़ दी है।

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

सूनी नहीं रहेगी कोई गोद.... अब लैब में ही तैयार होगा स्पर्म और एग

इनफर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे दंपतियों की भी अब गोद भर सकेगी. यह संभव होगा प्टळ तकनीक से. इसके तहत लैब में स्पर्म और एग विकसित किए जाएंगे. ओसाका यूनिवर्सिटी के प्रो. हायाशी ने दावा किया है कि वह और उनकी इस दिशा में लगातार जुटे हुए हैं और जल्द ही यह रिसर्च पूरी कर ली जाएगी.

सबका जम्मू कश्मीर

फर्टिलिटी यानी प्रजनन क्षमता घट रही है, दुनिया के कई देश ऐसे हैं जो इस समस्या से जूझ रहे हैं. वैज्ञानिक इस प्रॉब्लम का सॉल्यूशन ढूंढने लगे हैं. ऐसा ही एक रिसर्च चल रही है ओसाका यूनिवर्सिटी में, यहां के वैज्ञानिक प्रो. कात्सुहिको हायाशी ने दावा किया है कि जल्द ही लैब में स्पर्म (शुक्राणु) और एग (अंडाणु) बनने लगेंगे. अगले 7 साल में यह तकनीक पूरी तरह से विकसित कर ली जाएगी. इस तकनीक को इन–विट्रो गैमेटोजेनेसिस कहते हैं. हायाशी के मुता. बिक उन करोड़ों कपल्स के लिए उम्मीद की किरण की तरह है जो इनफर्टिलिटी से जूझ रहे हैं.

प्रो. हायाशी के मुताबिक वह और उनकी टीम इस तकनीक पर तेजी से काम कर रही है. वह कहते हैं कि जल्द ही ऐसी यौन कोशिका विकिसित की जाएगी जो सामान्य प्रजनन प्रक्रिया में प्रयोग की जा सके.इससे फर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे कपल्स तो माता–पिता बन ही सकेंगे, बल्कि समलैंगिक जोड़ों, कैंसर पीड़ितों और उम्र दराज दंपतियों को भी लाभ मिलेगा. प्रो. हायाशी के हवाले से द गार्जियन में प्रका. शित रिपोर्ट के मुताबिक लैब में स्पर्म और एग विकसित करने की रेस में कैलिफॉर्निया की स्टार्टअप कंपनी ब्वदबमचजपवद ठपवेबपमदबमे भी आगे हैं. इसके ब्म के मुताबिक लैब में स्पर्म पैदा करने से जनसंख्या में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है. इस स्टार्टअप को ओपनएआई के संस्थापक सैम ऑल्टमैन समेत कई दिग्गजों का समर्थन प्राप्त है.

त्वचा व रक्त कोशिकाओं से बनेंगी यौन कोशिका

रिसर्च के मुताबिक सब कुछ ठीक रहा तो जल्द ही किसी भी व्यक्ति त्वचा व रक्त कोशिकाओं से संतान को जल्द देना संभव होगा. भले ही वह व्यक्ति जैविक तौर पर कभी माता–पिता न बन सकता हो. गार्जियन से बात करते हुए ओसाना विवि के प्रोफेसर कात्सुहिको हायाशी ने कहा कि इस रिसर्च में तेजी से प्रगति हो रही है. इसी सप्ताह पेरिस में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन एंड एम्ब्रियोलॉजी की वार्षिक बैठक में उन्होंने कहा था कि मुझे थोड़ा दबाव महसूस होता है, ऐसा लगता है कि मैं किसी दौड़ में भाग ले रहा हूं, लेकिन मैं वैज्ञानिक मूल्य की भावना बनाए रखने की कोशिश करता हूं.

चूहों पर सफल रहा है प्रयोग

प्रो. हायाशी ने बताया कि यह एक बहुत बड़ी रिसर्च होगी, चूहों पर प्रयोग सफल रहा है, हमने एक ऐसा चूहा बनाया है, जिसके दो पिता हैं, यानी यह तकनीक समलैंगिक जोड़ों के लिए भी वरदान हो सकती है. वह बताते हैं कि हमें सप्ताह में कम से कम एक ईमेल ऐसा आता है, जिसमें इनफर्टिलिटी के मरीज अपनी परेशानी बताते हैं. इसलिए मैं इस समस्या को समझता हूं. स्टार्टअप कंपनी कॉन्सेशन के सीईओ मैट क्रिसिलॉफ ने गार्जियन को बताया कि प्रयोगशाला में विकसित एग सब कुछ बदल देंगे. यह महिलाओं को अधिक उम्र में बच्चे पैदा करने की अनुमति देगा.

लैब में ऐसे बनेगा स्पर्म

ईएसएचआरई सम्मेलन में प्रो. हायाशी ने बताया कि अब तक हमें चूहों के स्पर्म को बनाने और मानव अंडकोष विकसित करने में सफलता मिल गई है.अब हम पूरी तरह आईवीजी पर काम कर रहे हैं. इसमें किसी व्यक्ति की स्किन या रक्त को. शिकाओं से स्टेम कोशिकाएं बनाई जाती हैं, फिर इन्हें जर्म कोशिकाओं में बदल दिया जाता है. ये एग और स्पर्म की शुरुआत की तरह होते हैं. इन्हें लैब में बनाई गई स्टेम कोशिकाओं में रखा जाता है. यही जर्म कोशिकाओं से एग या स्पर्म बना सकते हैं. चूहों में ये प्रयोग भी सफल हो चुका है.

अभी लगेंगे सात साल

प्रो. हायाशी ने कहा कि लैब में स्पर्म को विकसित करने में अभी सात लग सकते हैं, इसें महिलाओं की कोशिश से स्पर्म विकसित करने में चुनौती महसूस हो रही है. हालांकि उन्होंने इसे असंभव नहीं कहा. अन्य विशेषज्ञ भी हायाशी की समय सीमा से सहमत हैं. एडिनबर्ग विवि में कैंसर से पीड़ित बच्चों में पुरुष प्रजनन क्षमता के संरक्षण के लिए शोध कर रहे प्रोफेसर रॉड मिशेल ने कहा कि विज्ञान तेजी से बढ़ रहा है, हमें उम्मीद है कि हम पांच या दस साल के समय में अंडाशय और अंडकोश में लैब में बने स्पर्म और एग देख पाएंगे.

हमें साबित करना होगा कि तकनीक सुरक्षित है

मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के एंड्रोलॉजी के प्रोफेसर और उप–उपाध्यक्ष प्रोफेसर एलन पेसी ने प्रो. हायाशी की बात पर सहमति जताई. उन्होंने कहा कि कई प्रयोगशाला में उगाए गए अंडो से शिशु चूहे पैदा किए गए हैं. हालांकि मानव एग बनाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हाल ही में इस बारे में लोगों की ज्यादा समझ विक. सित हुई है कि आखिर निष्क्रिय अवस्था में मानव अंडे कैसे रहते हैं. ज्यादातर लोगों का मानना है कि अभी इस तकनीक में कई वर्ष लग सकते हैं. हालांकि अच्छी बात ये है कि प्रयोगशाला में बने चूहों का जीवनकाल अच्छा रहा है और उन्होंने भी सामान्य चूहों की तरह बच्चे पैदा किए हैं. प्रो. हायाशी ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी ये भी है कि हम इस बात को साबित करें कि ये तकनीक सुरक्षित है. उन्होंने कहा कि बेशक मैंने दो पिताओं से एक चूहा बनाया, मगर यह प्राकृतिक नहीं है.

अंतरिक्ष में अजीबो गरीब रेडियो सिग्नल कहां से आते हैं, वैज्ञानिकों ने सुलझाया रहस्य

स्पेस साइंटिस्ट्स ने आखिरकार उन अजीबोगरीब रेडियो सिग्नल की गुत्थी सुलझा ली है, जो अब तक विज्ञान के लिए एक पहेली बने हुए थे. कहा जा रहा है कि ये खोज सितारों के जीवन के अंतिम चरणों को समझने के तरीके को पूरी तरह बदल सकती है. वैज्ञानिकों के अनुसार, यह सिग्नल हर दो घंटे में दोहराता है और इसे पहली बार एक दशक पहले खोजा गया था.

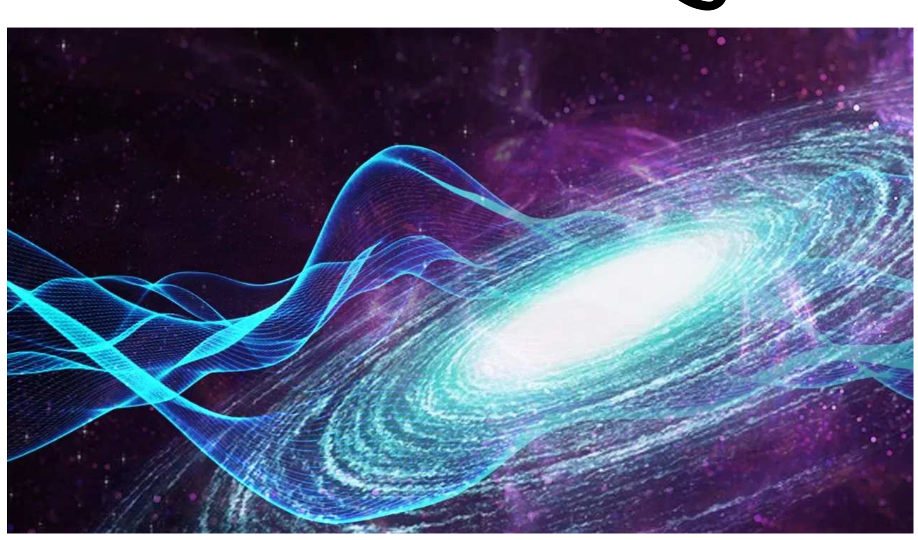

सबका जम्मू कश्मीर

अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी रेडियो सिग्नल हमेशा से वैज्ञानिकों और आम लोगों की जिज्ञासा बढ़ाते रहे हैं. पिछले साल वैज्ञानिकों ने एक ऐसा ही अजीबोगरीब सिग्नल पकड़ा था, जो हर दो घंटे में दोहराया जाता था. अब, आखिरकार इसकी गुत्थी सुलझा ली गई है.

पता चला है कि ये सिग्नल एक अनोखे बाइनरी सिस्टम से आ रहा है, जिसमें एक मरता हुआ तारा (व्हाइट ड्वार्फ) और उसका साथी एक छोटा लाल तारा (रेड ड्वार्फ) शामिल हैं. वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह सिग्नल पहली बार करीब एक दशक पहले देखा गया था और यह हमारी आकाशगंगा के बिग डिपर नक्षत्र की दिशा से आ रहा है.

कैसे हुआ इस रेडियो सिग्नल का पता?

इस रेडियो सिग्नल की खोज एस्ट्रोनॉमर आइरिस डी रुइटर ने की, जो ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में शोध कर रही हैं. उन्होंने 2024 में लो फ्रीक्वेंसी एरे (लोफर) टेलीस्कोप से मिले पुराने डेटा को खंगालते हुए इस सिग्नल को खोज निकाला. लोफर दुनिया का सबसे बड़ा रेडियो टेलीस्कोप है, जो बहुत कम फ्रीक्वेंसी वाले रेडियो सिग्नल पकड़ सकता है. पहली बार यह सिग्नल 2015 के डेटा में देखा गया था. इसके बाद वैज्ञानिकों ने इस स्रोत से छह और बार ऐसे ही पल्स दर्ज किए.

ये रेडियो तरंगें कुछ सेकंड से लेकर कई मिनट तक चल सकती हैं, लेकिन इनकी विशेषता यह थी कि ये हर दो घंटे में नियमित रूप से दोहराती थीं.

व्हाइट ड्वार्फ क्या होता है?

व्हाइट ड्वार्फ एक ऐसा तारा होता है, जो अपने जीवन के अंतिम चरण में पहुंच चुका होता है. जब कोई तारा अपने ईंधन को जला चुका होता है, तो वह अपने बाहरी परतों को छोड़ देता है और उसका भीतरी भाग सिकुड़कर बहुत घना और छोटा हो जाता है.

यह सफेद रंग का चमकदार बिंदु बन जाता है, जिसे व्हाइट ड्वार्फ कहा जाता है.

क्या यह फास्ट रेडियो बर्स्ट जैसा है?

वैज्ञानिकों को यह सिग्नल ब्रह्मांड में होने वाली एक अन्य घटना, फास्ट रेडियो बर्स्ट (एफआरबी) के समान लगा, लेकिन दोनों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर थे. थ्त्ठ केवल कुछ मिलीसेकंड के लिए चमकते हैं, जबकि यह नया सिग्नल कई सेकंड से लेकर कुछ मिनट तक जारी रहता है.

मृत तारे की चुंबकीय शक्ति का असर

अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस सिग्नल के स्रोत का विस्तृत अध्ययन किया और पता चला कि यह आईएलटीजे1101 नामक एक द्विगुणीय प्रणाली से आ रहा है, जो पृथ्वी से 1,600 प्रकाश–वर्ष की दूरी पर स्थित है. इसमें एक व्हाइट ड्वार्फ और एक रेड ड्वार्फ तारा बहुत करीब–करीब एक–दूसरे की परिक्रमा कर रहे हैं. इन दोनों तारों के बीच तीव्र चुंबकीय क्षेत्र है, जो रेडियो सिग्नल पैदा कर रहा है. जब यह व्हाइट ड्वार्फ अपने साथी तारे के पास से गुजरता है, तो उसकी शक्तिशाली चुंबकीय ऊर्जा रेड ड्वार्फ पर प्रभाव डालती है, जिससे रेडियो तरंगें पैदा होती हैं.

कैसे की गई गहराई से जांच?

वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की गहराई से जांच करने के लिए अमेरिका के एरिज़ोना स्थित मल्टीपल मिरर टेलीस्कोप और टेक्सास स्थित मैकडोनाल्ड ऑब्जर्वेटरी का इस्तेमाल किया. इन उपकरणों ने दिखाया कि रेड ड्वार्फ और व्हाइट ड्वार्फ हर 125. 5 मिनट में एक–दूसरे के चारों ओर घूम रहे हैं.

इसके बाद, वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की रोशनी को वेवलेंथ में विभाजित करके अध्ययन किया. इस प्रक्रिया से उन्हें पता चला कि रेड ड्वार्फ अत्यधिक गति से आगे–पीछे झूल रहा है, जो यह साबित करता है कि यह किसी अदृश्य साथी से गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव झेल रहा है. यही अदृश्य साथी एक व्हाइट ड्वार्फ तारा निकला.

नगरी पैरोल शाखा में निरंकारी विशाल संगत का आयोजन, आत्मबोध का दिया गया संदेश

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी/कठुआ। मंगलवार ब्रांच नगरी पैरोल के अंतर्गत गांव गूंद, पमवाल व पंडोरी के स्थान पर निरंकारीकठुआ विशाल संगत का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मानव जीवन के उद्देश्य और आत्मबोध के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

संगत को संबोधित करते हुए बताया गया कि मनुष्य को यह समझना आवश्यक है कि उसे यह जीवन क्यों मिला है और इस जन्म का वास्तविक उद्देश्य क्या है। निरंकारी मिशन इसी उद्देश्य से समाज को सही मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है।

इस अवसर पर सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज द्वारा ब्रह्मज्ञान के माध्यम से आत्मा का बोध करवाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से पूज्य महात्मा बी.आर. निरंकारी जी, संयोजक एवं ज्ञान प्रचार कठुआ, ने उपस्थित संगत को अपने आशीर्वाद से निहाल किया।

इस विशाल संगत में ब्रांच नगरी पैरोल की सर्व साध संगत ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में स्थानीय मुखी महात्मा डॉ. नरदेव सिंह जी ने उपस्थित सभी साध संगत का धन्यवाद किया और आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी के सहयोग की सराहना की।

रोहिंग्या–बांग्लादेशी नेटवर्क, फर्जी आधार और जनसांख्यिकी बदलने का खेल – शिकायतों में बड़ा खुलासा'

रविंद्र आर्य

भारतीय जनता पार्टी के लोनी विधायक नन्द किशोर गुजर का कहना है कि शीघ्र ही ट्रॉनिका सिटी क्षेत्र मजार–मुक्त होगा। लोनी में धर्म की आड़ में लेंड जिहाद (भूमि जिहाद) किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। विधायक का यह बयान अपने क्षेत्र की आंतरिक समस्या को लेकर पूरी तरह सही प्रतीत होता है, क्योंकि मजारों का इस तरह अचानक उग आना किसी धार्मिक आस्था से अधिक एक सुनियोजित भूमि–कब्ज़ा मॉडल (कार्य–प्रणाली) की ओर इशारा करता है।

लेकिन विधायक इस बात से अभी पूरी तरह से अवगत नहीं हैं कि असल लेंड जिहाद (भूमि जिहाद) अब शुरू होगा, जब दिल्लीदृएनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में लाखों की संख्या में बसे अवैध अप्रवासी गाज़ीपुर मंडी की मुल्ला कॉलोनी और उसके आसपास क्षेत्र से हटाए जाएंगे। यह वही क्षण होगा, जब यह पूरा नेटवर्क (संगठित जाल) कूड़ा बीनने और गरीबी की आड़ लेकर गाज़ियाबाद, लोनी और नोएडा के बॉर्डर (सीमावर्ती) क्षेत्रों में फैल जाएगा।

यह आरोप है कि सरकारी ज़मीनों पर कब्ज़ा करवाया जाएगा, निजी प्लॉट (भूखंड) और मकानों में इन्हें किरायेदार बनाकर मोटा किराया वसूला जाएगा और इस पूरे खेल में पुलिस व अन्य प्रशासन से लेकर स्थानीय नेता तक शामिल होंगे। यही वह असली लेंड जिहाद (भूमि जिहाद) होगा, जो एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में लोनी तक खेला जाएगा।

'दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के बाद होंगी नई चुनौती'

गाज़ीपुर डेरी फार्म के स्थानीय याचिकाकर्ता मनोज भाटी के अनुसार, उपजिलाधिकारी (एसडीएम) के आदेश के आधार पर पिछले सप्ताह उच्च न्यायालय में याचिका दायर की गई थी, जिसमें 15 जनवरी 2026 की तारीख के बाद अनुमान लगाया जा रहा है कि अदालत के आद. शानुसार गाज़ीपुर मंडी क्षेत्र की अवैध झुग्गियां और झोपड़ियां हटाई जाएंगी। मनोज भाटी इससे पहले भी दिल्ली उच्च न्यायालय से उपजिलाधिकारी के आदेश को आधार बनाकर अवैध मस्जिद, मदरसा और अन्य कब्ज़े हटवा चुके हैं।

उनका मानना है कि माननीय उपराज्यपाल दिल्ली को तत्काल कार्रवाई कर सरकारी ज़मीनों पर अतिक्रमण होने से रोकना चाहिए और दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड, दिल्ली विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, विशेष कार्य बल और नगर निगम को सभी अवैध कब्ज़े करने वाले भू–माफियाओं तथा गाज़ीपुर थाना प्रभारी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

उनका आरोप है कि ये अवैध अप्रवासी अब ज़्यादा दिन गाज़ीपुर मंडी क्षेत्र में नहीं रह पाएंगे और जैसे ही इन्हें हटाया जाएगा, इन्हें दिल्ली से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में धीरे–धीरे सुनियोजित चाल के तहत बसाया जाएगा। इसके पीछे तर्क दिया जाएगा कि ये भारत के ही नागरिक हैं, गरीबी रेखा में जीवन यापन करते हैं और कूड़ा बीनने जैसे "उचित" कार्य कर रहे हैं, जबकि इसके पीछे की कहानी बिल्कुल अलग होगी।

आरोप है कि बिना सत्यापन के नकली आधार कार्ड के आधार पर अवैध अप्रवासियों का निकाह कराकर नकली से असली भारतीय बनाना, ओजीडब्लू (ओवर ग्राउंड वर्कर दृ ज़मीनी सहयोगी) तैयार करना, अवैध उगाही कर मस्जिद–मदरसे बनवाना, अवैध अतिक्रमण कर जनसांख्यिकी भी बदलना कृ ये चारों काम जेहादी मानसिकता के तहत एक साथ किए जा रहे हैं।

यहां अकबरदृबीरबल का वह प्रसिद्ध किस्सा भी याद आता है, जिसमें अकबर ने पूछा था कि राज्य में सबसे बड़ा चालाक कौन है, जो बिना हिचक खंभे पर चढ़ जाए। बीरबल ने कहा था कि चोर ही सबसे बड़ा चालाक होता है। यही किस्सा आज यहां लागू होता है। ये वही चोर हैं जो आज सबसे बड़ा सिरदर्द बनकर पूरी चालाकी से यह सारा खेल खेल रहे हैं। नकली पहचान पत्रों के आधार पर लाखों रुपये कमाकर झुग्गीदृझोपड़ी का अवैध धंधा सुनियोजित रणनीति के तहत चलाया जा रहा है।

आरोप है कि दिल्ली से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में इन्हें फिर से इसी बहाने बसाया जाएगा कि ये भारतीय हैं और कूड़ा बीनने का कार्य करते हैं, जबकि हकीकत में यह अवैध अप्रवासियों के लिए नकली आधार कार्ड, भारतीयों से निकाह नेटवर्क और ओजीडब्लू मॉडल के ज़रिये एक बड़ा खेल होगा।

'मजारों से नहीं, दिल्ली सीमा से फैल रहा असली लेंड जिहाद'

विधायक नन्द किशोर गुजर के लिए यह समझना ज़रूरी है कि असली लेंड जिहाद लोनी की मजारों से नहीं, बल्कि उन अवैध अप्रवा. सियों से है जिन्हें पहले ही 12 राज्यों के बड़े शहरों में बसाया जा चुका है, जिनमें दिल्लीदृएनसीआर भी शामिल है। ऐसे ही आरोपी म्यांमार का इब्राहिम जम्मू में वर्मा कॉलोनी तक बसा चुका है, जिसे हाल ही में कानपुर पुलिस ने पकड़ा है।

'डुप्लीकेट आधार कार्ड से शुरू होकर, कहाँ जाकर रुकता है यह जेहादी खेल?'

गाज़ीपुर डेरी फार्म के दिल्ली उच्च न्यायालय के याचिकाकर्ता मनोज भाटी और गाज़ियाबाद के पूर्व राज्य कर अतिरिक्त आयुक्त महेश अवस्थी द्वारा लगाए गए आरोपों के अनुसार, गाज़ीपुर मंडी और भोंआपुर गांव के कुछ लोगों ने किराये के लालच में अवैध अप्रवासियों को पक्के मकान और खाली विवादित भूखंड किराये पर दिए। आरोप है कि यह सब गाज़ीपुर मंडी थाने की पुलिस की साठगांठ और क्षेत्रीय नेताओं की मिलीभगत से हुआ है।

आश्चर्य की बात यह है कि गाज़ीपुर मंडी थाना से मात्र 500 मीटर की दूरी पर ही मुल्ला कॉलोनी बसी हुई है। पास ही श्मशान घाट है, जहाँ नए कब्ज़े शुरू हो गए हैं।

आरोप है कि आनंद विहार सीमा से गाज़ीपुर मंडी तक अनेक अवैध मस्जिदें और मदरसे हैं, जहां तब्लीगी जमात का ठहराव, मदरसा छाप तालीम और बांग्लादेशी, रोहिंग्या मुस्लिम समुदाय तथा कश्मीरी लोगा. की आवाजाही देखी जाती है। इसके बावजूद पुलिस मौन है।

हालिया दिल्ली विस्फोट के बाद कश्मीरी नेटवर्क पर भरोसा नहीं किया जा सकता कृ ऐसा आरोप स्थानीय लोगों ने लगाया है। रात भर कश्मीर से गाज़ीपुर मंडी आने–जाने वाले ट्रकों को लेकर भी आशंका जताई जा रही है कि कहीं इनके माध्यम से हथियार, नशीले या ज्वलनशील पदार्थ तो नहीं लाए जा रहे। गुप्त सूत्रों के अनुसार, बच्चों, लड़कियों और महिलाओं को ट्रकों में मजदूरी के नाम पर ले जाकर दस्तावेज़ी विवाह (निकाह) के माध्यम से भारतीय बनाया जाता है। यह खेल डुप्लीकेट आधार कार्ड से शुरू होकर कहाँ जाकर रुकता है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है।

'ओजीडब्लू बनना देश के लिए खतरे का संकेत है'

ग्राउंड रिपोर्टिंग (मैदानी जांच) के दौरान वरिष्ठ खोजी पत्रकार रविंद्र आर्य ने पाया कि गाज़ीपुर मंडी के लगभग दो किलोमीटर क्षेत्र में झुग्गी–झोपड़ियां, पक्के मकानों, खाली भूखंडों, निजी और सरकारी ज़मीनों तथा श्मशान घाट तक अवैध अप्रवासी बसे हुए हैं। इनमें बांग्लादेशी, रोहिंग्या मुस्लिम समुदाय और कश्मीरी भी शामिल हैं। अवैध कार्य, अवैध कब्ज़ा, गुंडागर्दी, हथियार, फर्जी आधार कार्ड और निकाह के ज़रिये ओजीडब्लू बनना देश के लिए गंभीर खतरे का संकेत है।

'जैसे जम्मू में वर्मा कॉलोनी है, वैसे ही दिल्ली सीमा क्षेत्रों में आशियाने'

ज्योतिषाचार्य डॉ. सीताराम पंडित का आरोप है कि गाज़ियाबाद सीमा पर एक नेता की शह पर भोंआपुर गांव में एक किलोमीटर तक झुग्गियां बसाई गईं। उनका कहना है कि एक ओर विधायक नन्द किशोर गुजर लेंड जिहाद के खिलाफ खड़े हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ नेता अंदरखाने अवैध अप्रवासियों को बसाते रहे हैं।

आरोप यह भी है कि उच्च न्यायालय के आदेश के बाद झुग्गियां हटेंगी तो ये अवैध अप्रवासी लोनी, नोएडा और गाज़ियाबाद सीमा की ओर भागेंगे। सरकारी से लेकर निजी ज़मीन तक पर कब्ज़ा होगा और फर्जी आधार कार्ड दिखाकर इन्हें भारतीय बताया जाएगा। जैसे जम्मू में वर्मा कॉलोनी बनी, वैसे ही दिल्ली एनसीआर के सीमा क्षेत्रों में नई कॉलोनियां बसाने की तैयारी है।

'गाज़ीपुर मंडी से हटेंगे अवैध अप्रवासी, नोएडादृलोनीदृगाज़ियाबाद में बसाने की साज़िश का आरोप'

इसी क्रम में वीर चक्र से सम्मानित कर्नल तजेंद्र त्यागी भी देशवि. रोधी गतिविधियों के खिलाफ इस मुहिम में शामिल हुए हैं। उनका कहना है कि यह देश की आंतरिक सुरक्षा का प्रश्न है। 15 जनवरी के बाद वह निजी चैनल पर इस पूरे नेटवर्क का भू–राजनीतिक विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे और बताएंगे कि कैसे सीमांचल क्षेत्रों से म्यांमार, बांग्लादेश और नेपाल के रास्ते अवैध अप्रवासी भारत में दाखिल होकर मजदूरी के नाम पर चंद रुपए मे भारतीय बना दिए जाते हैं।

कर्नल तजेंद्र त्यागी, मनोज भाटी, महेश अवस्थी, डॉ. सीताराम पंडित, अनिल यादव और अन्य नागरिकों ने आमजन से अपील की है कि देश. हित में सत्यापन और जांच की मांग करते हुए प्रशासन का सहयोग करें। आनंद विहार सीमा क्षेत्र कृ जहां हिंडन एयरपोर्ट, पीएसी 44 कैंप, सीआरपीएफ कैंप, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, वीआईपी होटल, मेट्रो और मॉल स्थित हैं कृ अत्यंत संवेदनशील है। बिना सत्यापन बसे अवैध अप्रवासी किसी भी देशविरोधी गतिविधि को अंजाम देकर रातों–रात गायब हो सकते हैं।

ग्राउंड रिपोर्ट – रविंद्र आर्य
(वरिष्ठ खोजी पत्रकार एवं लेखक)

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

4.5 अरब साल पहले कैसी थी पृथ्वी की सतह? कांपती धरती ने खोले गहरे राज

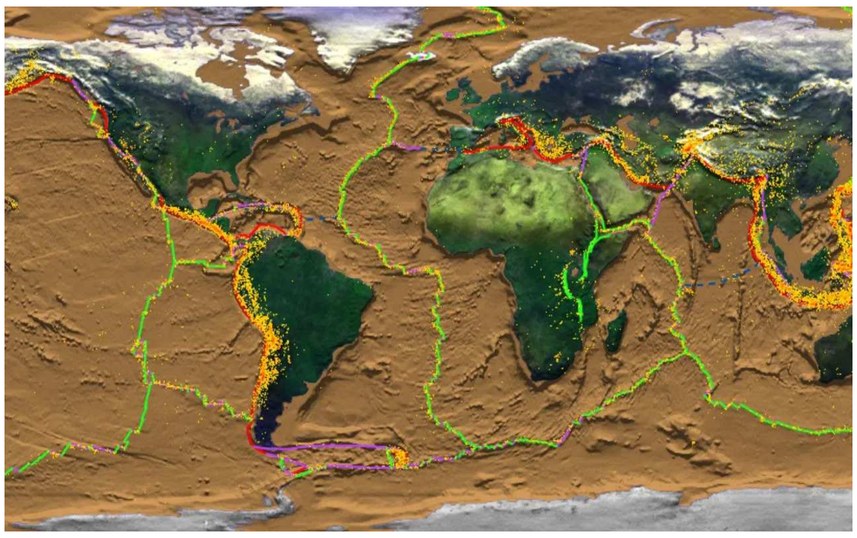

सबका जम्मू कश्मीर

वैज्ञानिकों ने एक नए शोध में पृथ्वी की 4.5 अरब साल पुरानी सतह के रासायनिक रहस्यों को उजागर किया है. स्टडी में पाया गया कि पृथ्वी की शुरुआती सतह में वही रासायनिक विशेषताएं थीं, जो आज के महाद्वीपीय क्रस्ट में देखी जाती हैं. इससे पता चलता है कि यह रासायनिक पहचान पृथ्वी के बनने के समय से ही मौजूद थी, न कि प्लेट टेक्टॉनिक्स की शुरुआत के बाद.

थी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहां प्लेट प्लेट टेक्टोनिक्स मौजूद है. यह प्रक्रिया महाद्वीपों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और माना जाता है कि जीवन की उत्पत्ति में भी सहायक रही होगी. लेकिन एक बड़ा वैज्ञानिक सवाल अब भी बना हुआ है कि पृथ्वी पर प्लेट टेक्टोनिक्स की शुरुआत कब हुई? इस सवाल का जवाब खोजने के लिए वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की 4.5 अरब साल पुरानी सतह की स्टडी किया है. इस नई रिसर्च में वैज्ञानिकों ने इस रहस्य को सुलझाने के लिए पृथ्वी के शुरुआती मेंटल और उस समय के रासायनिक तत्वों के व्यवहार का विश्लेषण किया. इस अध्ययन को प्रतिष्ठित जर्नल नेचर में प्रकाशित किया गया है.

क्या बता रहे रिसर्चर्स?

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, कर्टिन विश्वविद्यालय, क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी और यूनिवर्सिटी ऑफ लियोन के शोधकर्ताओं की टीम ने गणितीय मॉडलिंग का इस्तेमाल करके यह जानने की कोशिश की कि जब पृथ्वी का कोर बन रहा था और सतह पिघले हुए लावा से ढकी थी, तब उसमें क्या रासायनिक प्रक्रियाएं चल रही थीं.

रिसर्चर्स के अनुसार, पृथ्वी की सबसे प्रारंभिक सतह, जिसे प्रोटोक्रस्ट कहा जाता है, उसमें वही रासायनिक विशेषताएं पाई गईं, जो आज के महाद्वीपीय सतह में देखी जाती हैं. उदाहरण के लिए, नियोबियम तत्व पिघलकर पृथ्वी के कोर में चला गया, जबकि रेयर अर्थ एलिमेंट्स सतह पर मौजूद मैग्मा के साथ ऊपर आ गए और ठंडा होकर क्रस्ट बनाने लगे.

इससे पता चलता है कि जिस रासायनिक पहचान को वैज्ञानिक अब तक प्लेट विवर्तनिकी की शुरुआत का संकेत मानते थे, वह दरअसल पृथ्वी के बनने के समय से ही मौजूद थी.

क्यों महत्वपूर्ण है ये रिसर्च?

इस खोज के महत्वपूर्ण नतीजे हो सकते हैं. इसका मतलब यह है कि वैज्ञानिकों द्वारा पहले माना गया यह विचार गलत हो सकता है कि जब प्लेट विवर्तनिकी शुरू हुई, तभी महाद्वीपीय क्रस्ट ने अपनी अनूठी रासायनिक पहचान विक. सित की.

इसके विपरीत, इस अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि यह रासायनिक पहचान शुरुआत से ही थी और समय के साथ यह बार–बार पुनर्चक्रित होकर द्वीपीय चापों में समाहित होती गई.

इसलिए, वैज्ञानिकों को प्लेट विवर्तनिकी की शुरुआत का पता लगाने के लिए अब किसी अन्य संकेतक की तलाश करनी होगी.

फट जाएगी जमीन, मचेगी अविश्वसनीय तबाही... चीन में बड़े संकट का खतरा

सबका जम्मू कश्मीर

चीन के भूवैज्ञानिकों ने 150 वर्षों के आंकड़ों के आधार पर एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें सिचुआन, युन्नान और हिमालयी क्षेत्र में 8 तीव्रता के भूकंप की भविष्यवाणी की गई है. यह भविष्यवाणी पामीर-बाइ. काल भूकंपीय बेल्ट में भूकंप के चक्र को ध्यान में रखते हुए की गई है. अगहर चीन में भविष्यवाणी सच साबित होती है तो अविश्वनीय तबाही

चीन के भू–वैज्ञानिकों ने कुछ ही दिन बाद अपने देश में शक्तिशाली भूकंप आने की भविष्यवाणी की है. चीन के इन वैज्ञानिकों का कहना है कि यहां पर 8 तीव्रता की भूकंप कभी भी आ सकती है. अगर यह भविष्यवाणी सच होती है तो चीन के कई इलाके पूरी तरह बर्बाद हो जाएंगे.

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक बीजिंग भूकंप सबका जम्मू कश्मीर के वरिष्ठ इंजीनियर झू हॉंगिन की टीम ने एक रिपोर्ट तैयार की है, जो 150 सालों के भूकंप के आधार पर है. इस रिपोर्ट ने चीन सरकार की टेंशन बढ़ा दी है.

भूकंप को लेकर इस रिपोर्ट में क्या है?

रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्व एशिया के पामीर–बाइकाल भूकंपीय बेल्ट में पिछले 150 साल में 12 शक्तिशाली भूकंप के झटके महसूस किए गए. इनमें से भूकंप के 5 झटके चीन के आसपास ही लगे. अब जो उसका छठा चक्र है, उसकी वजह से चीन के आसपास ही भूकंप के झटके महसूस किए जाएंगे.

रिपोर्ट में कहा गया है कि सिचुआन, युन्नान और हिमालयी मोर्चे पर भूकंप आ सकता है. इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 8 की होगी. भूकंप आने की बड़ी वजह यहां के टेक्टॉनिक प्लेटों के बीच घर्षण में तेजी आना है.

म्यांमार ने बढ़ाई चीन की टेंशन

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट का कहना है कि म्यांमार में आए भूकंप के बाद इस भविष्यवाणी ने चीन की सरकार को डरा दिया है. हालांकि चीन के सरकारी वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी इस बात के संकेत नहीं मिले हैं कि धरती इसी साल हिल जाएगी. चीन के सिचुआन प्रांत में साल 2008 में भूकंप का झटका महसूस किया गया था.

वहीं जिन वैज्ञानिकों ने ये रिपोर्ट तैयार की है, उनका कहना है कि इसी साल भूकंप का शक्तिशाली झटका लग सकता है. ऐसी स्थिति में चीन की हजारों इमारतें जमींदोज हो जाएगी.

हाल ही में म्यांमार में 7.6 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया था, जिसमें अब तक 3000 लोगों की मौत हो गई. हालांकि, कहा जा रहा है कि अभी भी सैकड़ों लोग मलबे में दबे हुए हैं.

वहीं आंकड़े छुपाने के लिए म्यांमार की सरकार ने मीडिया रिपोर्टिंग पर बैन लगा दिया

भारत में सऊदी के अगले दिन तो इंडोनेशिया में 3 दिन बाद शुरू होता है रमजान, जानिए बाकी देशों का हाल

सबका जम्मू कश्मीर

रमजान का चांद सबसे पहले कहां दिखता है? इसका जवाब सऊदी अरब है और रोजा रखने वाले अधिकांश मुसलमान इसे जानते भी हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि पूरी दुनिया में रमजान के विधिवत शुरू होने में कम से कम 3 दिन का समय लग जाता है. उदाहरण के लिए सऊदी अरब में अगर 28 फरवरी की शाम को रमजान का चांद दिखता है तो भारत में उसके अगले दिन से इसे मनाने की घोषणा की जाती है.

इसी तरह इंडोनेशिया में सऊदी के 3 दिन बाद विधिवत रूप से रमजान की घोषणा की जाती है. दरअसल, यह चांद के निकलने और संबंधित देश में दिखने की वजह से यह होता है.

रमजान की घोषणा कैसे होती है?

रमजान इस्लामी पंचांग का नौवां महीना है और इस्लाम में इसे सबसे पवित्र महीना माना जाता है. इस्लाम का पूरा चक्र सूर्य की वजाय चंद्रमा के गति पर निर्भर करता है. यही वजह है कि रमजान की घोषणा चांद देखने के बाद ही किया जाता है.

इस्लामिक कैलेंडर में एक महीना करीब 29 दिनों का होता है और एक साल करीब 355 दिनों का. यह ग्रेगोरियन के कैलेंडर से काफी अलग है, जहां 365 दिनों का एक साल होता है. इस्लामिक कैलेंडर में फेरबदल की वजह से रमजान का महीना हर बार अलग–अलग समय पर पड़ता है.

रमजान की घोषणा मुख्यतरू तीन बातों पर निर्भर करती है. इन्हीं तीन बातों की वजह से रमजान की घोषणा किसी देश में पहले तो किसी देश में बाद में की जाती है.

1. रमजान का चांद स्थानीय स्तर पर देखा जाता है. सभी देश के लोग कमेटी के जरिए इस चांद को देखते हैं. रमजान के चांद को अर्द्धचंद्र कहा जाता है. यानी अमावस्या के बाद जब चांद पूर्णिमा की तरफ बढ़े. यह चांद सूर्य के ढलने के तुरंत ही बाद दिखता है. कई बार मिस हो जाता है. चांद नहीं दिखने की स्थिति में रमजान महीने की घोषणा नहीं की जाती है.

2. इस्लाम मुख्यतरू दो भागों में विभाजित है. एक शिया और दूसरा सुन्नी. शिया और सुन्नी बहुल देश अपने–अपने हिसाब से चांद देखकर रमजान महीने की घोषणा करता है. दोनों ही समुदाय के जिम्मेदार लोग चांद को देखने के लिए काफी मेहनत करते हैं.

3. रमजान का रोजा कब से शुरू होगा, यह परिवारिक नेटवर्क पर भी निर्भर है. सीएनएन से बात करते हुए दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के प्रोफेसर स्कॉट कुगले कहते हैं– उत्तरी अमेरिका में रहने वाले लोग जिनके परिवार भारत या पाकिस्तान में रहते हैं. वे उत्तरी अमेरिका में तब रोजा रखना शुरू कर सकते हैं, जब पाकिस्तान या भारत में उनके परिवार वाले रोजा रखना शुरू कर दें.

रमजान में चांद का विज्ञान

इस तारीख को आसमान में दिखेंगे सातों ग्रह, 2040 से पहले आखिरी मौका

सबका जम्मू कश्मीर

आसमान की गहराइयों में छिपे रहस्यों को देखने का रोमांच ही अलग होता है. लेकिन इस हफ्ते, आसमान कुछ खास लेकर आ रहा है. अगर आप तारों और ग्रहों को निहारने के शौकीन हैं, तो यह सप्ताह आपके लिए यादगार बनने वाला है.

इस बार सात ग्रहकृमंगल, बृहस्पति, यूरेनस, शुक्र, नेपच्यून, बुध और शनिकृएकसाथ नजर आएंगे. ऐसा दुर्लभ नजारा 2040 से पहले फिर नहीं दिखेगा. 28 फरवरी को सूरज डूबने के बाद कुछ ही मिनटों के लिए, ये सातों ग्रह एक साथ चमकेंगे.

किन ग्रहों को बिना टेलीस्कोप के देख सकते हैं?

हमारे सौरमंडल के सभी ग्रह सूरज के चारों ओर एक ही समतल कक्षा में चक्कर लगाते हैं. लेकिन हर ग्रह की गति और दूरी अलग होती है. जब ये सभी ग्रह एक खास कोण पर आ जाते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि ये एक सीध में हैं, जिसे प्लैनेटरी परेड कहा जाता है. हालांकि असल में ये अरबों किलोमीटर दूर होते हैं.

स्ट्रेंजर थिंग्स वाली इलेवन या वेडनेसडे... दोनों में कौन है ज्यादा अमीर?

इस अद्भुत खगोलीय घटना में चार ग्रहकृबुध, शुक्र, बृहस्पति और मंगलकृआप बिना किसी दूरबीन या टेलीस्कोप के देख सकते हैं. शुक्र और बृहस्पति सबसे चमकीले रहेंगे, जिन्हें पहचानना बेहद आसान होगा. मंगल अपनी लालिमा के कारण अलग दिखेगा. शनि को देखना थोड़ा मुश्किल होगा क्योंकि यह क्षितिज के बहुत करीब होगा. यूरेनस और नेपच्यून को देखने के लिए आपको टेलीस्कोप की जरूरत पड़ेगी.

साप्ताहिक राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आपको निजी जीवन से लेकर करियर–कारोबार तक में उतार–चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। हालांकि सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहने वाली है। इस दौरान व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से खुद को मजबूत पाएंगे। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। युवाओं का अधिकांश समय मौज–मस्ती करते हुए बीतेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। सप्ताह के मध्य में आपको करियर–कारोबार में कुछ अप्रत्याशित बदलाव को झेलना पड़ सकता है।

इस दौरान नौकरीपेशा लोगों के सिर पर अचानक से अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ आ सकता है। जिसे पूरा करने के लिए आपको अधिक समय और ऊर्जा खर्च करने की आवश्यकता रहेगी।

वृषभ

वृष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी है। वृष राशि के जो जातक किसी कार्य विशेष के लिए बीते कुछ समय से लगातार प्रयासरत हैं, उन्हें इस सप्ताह भी उससे जुड़ी सफलता के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले उनका पूर्वार्ध थोड़ा राहत भरा रहने वाला है।

ऐसे में इस राशि के जातकों को अपने करियर–कारोबार और जीवन से जुड़े अहम कार्यों को इसी दौरान करने का प्रयास करना चाहिए। सप्ताह के मध्य में किसी व्यक्ति विशेष से मेल–मुलाकात होगी। जिसकी मदद से अटके कार्यों में धीमी गति से ही लेकिन प्रगति होती नजर आएगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में न सिर्फ कार्यक्षेत्र से जुड़ी बल्कि घर–परिवार से संबंधित समस्याएं भी आपकी परेशानी का कारण बन सकती हैं। इस दौरान पैतृक संपत्ति अथवा किसी जमीन–जायदाद को लेकर विवाद हो सकता है। अचानक से जीवन में तमाम तरह की समस्याएं सामने आने से आपका मन थोड़ा विचलित रह सकता है। हालांकि सुखद पहलू यह है कि इस दौरान आपके संगी–साथी आपकी ढाल बनेंगे और आपके साथ साए की तरह बने रहेंगे।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों को इस सप्ताह सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। यदि आप किसी कार्य विशेष के लिए लंबे समय से प्रयासरत थे तो उम्मीद का दामन बिल्कुल न छोड़ें क्योंकि इस सप्ताह उसमें आ रही बाधाएं स्वतः दूर होती हुई नजर आएंगी। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय नौकरीपेशा लोगों के लिए अनुकूल रहने वाला है।

इस दौरान आपके शुभचिंतक आपको नेक सलाह देते हुए नजर आएंगे, जिस पर अमल करके आप अपनी चीजों को सुव्यवस्थित कर सकते हैं। सप्ताह के मध्य में किसी तीर्थ स्थान पर जाने का अचानक प्रोग्राम बन सकता है। इस पूरे सप्ताह घरेलू महिलाओं का मन धार्मिक–कार्यों में खूब रमेगा। किसी धार्मिक–आध्यात्मिक व्यक्ति की विशेष कृपा आप पर बरस सकती है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आपके लिए सप्ताह के पूर्वार्ध के मुकाबले उत्तरार्ध ज्यादा शुभ रहने वाला है। इस दौरान आप समझदारी के साथ अपने पैसे का सही जगह निवेश करते हैं तो आपको उससे भविष्य में बड़ा लाभ मिल सकता है। उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लेकर आएगा।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित फलदायक रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातकों को किसी भी फैसले को लेते समय जल्दबाजी करने से बचना चाहिए। रिश्ते–नाते में मिठास बनी रहे और किसी प्रकार की गलतफहमी न पैदा हो इसके लिए स्वजनों के साथ संवाद बनाए रखें।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार के सिलसिले में बड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं। ऐसा करते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर को मिलाकर चलें। यदि कार्यक्षेत्र पर हालात आपके अनुकूल नहीं हैं तो आप उससे बजाय भागने के उसे बेहतर बनाने का प्रयास करें। भूलकर भी आवेश में आकर नौकरी में बदलाव जैसा फैसला लेने से बचें। सप्ताह के मध्य में घरेलू समस्याओं के चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको आपके विरोधी आप पर हावी होने तथा आपके बनते काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातकों को अपनी ऊर्जा, धन और समय का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में आपके सिर पर अचानक से कुछ बड़े खर्च आ सकते हैं। इस दौरान कार्य विशेष के लिए लंबी दूरी की यात्रा पर भी अचानक निकलना पड़ सकता है। यात्रा सुखद और नये संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले पूर्वार्ध का समय ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। ऐसे में आपको अपने कारोबार से जुड़े बड़े फैसले इसी दौरान करने चाहिए। सप्ताह के मध्य में आप कुछ चीजों को लेकर खुद को असमंजस की स्थिति में पा सकते हैं। ऐसे में इस दौरान कोई बड़ा फैसला लेते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। नौकरीपेशा जातकों इस सप्ताह अपने कार्य दूसरों के भरोसे छोड़ने की बजाय स्वयं बेहतर तरीके से पूरे करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा पूर्व में की गई न सिर्फ आपकी मेहनत बेकार जा सकती है, बल्कि वरिष्ठ अधिकारियों की डांट भी सुननी पड़ सकती है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। यदि आप चाहते हैं कि आपको जीवन में मनचाही सफलता और खुशियां मिले तो आपको अपने कार्य और व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाना होगा और अपने शुभचिंतकों को नाराज करने से बचना होगा। इस सप्ताह आपकी किसी बात या व्यवहार से आपके अपने नाराज हो सकते हैं। वाद–विवाद बढ़ने पर वर्षों से बने रिश्ते में दरार आ सकती है। करियर–कारोबार से लेकर घर–परिवार में सब कुछ अच्छा बना रहे इसके लिए दूसरों से अपेक्षा करने करने की बजाय आपको खुद ही आगे बढ़कर प्रयास करना होगा।

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में कनिष्ठ लोगों के साथ रुखा व्यवहार न करें और अपने वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। यदि आप व्यवसायी हैं तो शार्टकट तरीके से लाभ कमाने से बचें और कागजी काम पूरे करके रखें। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो धन का लेनदेन सावधानी के साथ करें।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए करियर और कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह उत्तम और रिश्ते–नाते की दृष्टि से मध्यम फलदायी रहने वाला है।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार से जुड़ा कोई बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। इस सप्ताह तुला राशि का नौकरीपेशा जातक हो या फिर व्यवसाय से जुड़ा कारोबारी, वह अपना शत प्रतिशत अपने कार्य में देता हुआ नजर आएगा।

खास बात कि उसके प्रयासों को सौभाग्य का भी पूरा साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी और सीनियर आपके कामकाज की खुले मन से प्रशंसा करते हुए नजर आएंगे। सप्ताह के अंत तक आपको बड़ा पद अथवा अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से किसी नये कारोबार की शुरुआत करने अथवा किसी बड़ी डील को फाइनल करने के लिए प्रयासरत थे तो आपकी यह मनोकामना इस सप्ताह पूरी हो सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी–रोजगार के लिए प्रयासरत थे तो सप्ताह के उत्तरार्ध में आपकी यह मनोकामना पूरी हो सकती है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए है। इस सप्ताह आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शुभता–सफलता की प्राप्ति होगी। इस सप्ताह आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। करियर–कारोबार में मनचाही प्रगति होती नजर आएगी। कार्यक्षेत्र में आपको सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। व्यवसाय में अच्छा मुनाफा कमाएंगे। यदि आपके कारोबार में बीते समय से कोई अड़चन आ रही थी इस सप्ताह वह किसी व्यक्ति विशेष की मदद से दूर हो जाएगी। मार्केट में आपकी साख बढ़ेगी। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो आप उसके विस्तार की योजना पर काम करेंगे। आपकी योजना को साकार रूप देने के लिए आपके शुभचिंतक और परिजन पूरी मदद करेंगे। इस संबंध में घर–परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की सलाह लाभदायी साबित होगी। यह सप्ताह पठन–पाठन एवं शोध से जुड़े कार्यों को करने वालों के लिए अत्यधिक शुभ साबित होगा।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह जीवन के नये अवसरों को लेकर आने वाला है, लेकिन उसका लाभ उठाने के लिए आपको आलस्य और आशंका को त्याग कर कठिन परिश्रम और प्रयास करना होगा। इस सप्ताह यदि आप अपने धन, समय और उर्जा का सही दिशा में उपयोग करते हैं तो आपको आशा से अधिक सफलता और लाभ मिल सकता हैं। वहीं इसकी अनदेखी करने पर बनते काम बिगड़ जाने से मन में निराशा के भाव जाग सकते हैं। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह खुले हाथ धन खर्च करने से बचना चाहिए अन्यथा सप्ताह के अंत तक उन्हें उधार मांगने की नौबत आ सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायी साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपको कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन साथ ही साथ खर्च की अधिकता भी बनी रहेगी। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह मौसमी बीमारी को लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। अपनी दिनचर्या और खानपान सही रखें अन्यथा पेट संबंधी दिक्कतें हो सकती है। परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को सप्ताह के मध्य में किसी सुखद समाचार की प्राप्ति संभव है।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह उतार–चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आप अपने करियर–कारोबार में आ रही अड़चनों को लेकर चिंतित रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र और कारोबार के अलावा निजी जीवन से जुड़ी समस्याएं भी आपकी बड़ी चिंता का कारण बनेंगी। हालांकि जीवन के कठिन समय में आपके शुभचिंतक एवं परिजन काफी मददगार साबित होंगे और काफी हद तक आप इन समस्याओं का समाधान खोजने में भी कामयाब होंगे। सप्ताह के मध्य में किसी भी कार्य को करते समय विशेष सावधानी बरतें। इस दौरान जल्दबाजी या असमंजस की स्थिति में लिया गया निर्णय आपके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इस दौरान स्वजनों के साथ बात–व्यवहार करते समय विनम्रता से पेश आएं अन्यथा लंबे समय से बने हुए रिश्तों में दरार आ सकती है। इस सप्ताह खर्च की अधिकता के चलते आपका बजट थोड़ा गड़बड़ा सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध में करियर–कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है।

कुंभ

जीवन में आने वाली छोटी–मोटी दिक्कतों को यदि नजरअंदाज कर दें तो कुंभ राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह शुभ साबित होगा। इस सप्ताह आपको आपकी मेहनत का पूरा फल प्राप्त होगा। करियर और कारोबार की दिशा में किए गये प्रयास सफल होंगे और आपके पद एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए हुए है। इस सप्ताह आपकी झोली में कोई बड़ा पद गिर सकता है। सत्तापक्ष से जुड़े लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप बढ़ेगा। आपके मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप अपनी सूझबूझ से अपने विरोधियों पर काबू पाने में कामयाब होंगे। कुंभ राशि के जो जातक तकनीक के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक का कारोबार करने वालों को बड़े लाभ की प्राप्ति होगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में किसी वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति से कार्य विशेष के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय जहां अनुकूल तो वहीं उत्तरार्ध थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। ऐसे में मीन राशि के जातकों को जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों सप्ताह की शुरुआत में ही निबटाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको इसी दौरान पूरे मनोयोग से रोजी–रोजगार के लिए प्रयास करना चाहिए। इस दौरान किसी व्यक्ति विशेष की मदद से भूमि–भवन से जुड़े विवाद का समाधान निकल सकता है। मीन राशि के जातकों को इस सप्ताह इस बात का पूरा ख्याल रखना होगा कि उनकी बात से ही बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ भी सकती है।

ऐसे में अपना काम निकलवाने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में जरा भी कंजूसी न करें और सभी के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। सप्ताह के पूर्वार्ध में आपके घर में कोई धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यक्रम संपन्न हो सकता है। इस दौरान घरेलू महिलाओं का अधिकांश समय पूजा–पाठ में बीतेगा।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज जी के 649वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर राजौरी में भव्य शोभायात्रा, संगत में दिखा उत्साह

अनिल भारद्वाज

जम्मू/राजौरी : श्री गुरु रविदास महाराज जी के 649वें प्रकाश उत्सव (जन्मोत्सव) के उपलक्ष्य पर वीरवार को जम्मू संभाग के अंतर्गत भारत–पाक नियंत्रण सीमा के साथ लगते राजौरी जिला में गुरु प्रेमियों में उत्साह देखने को मिला। क्षेत्र में विशाल शोभायात्रा (झांकियां) निकालने के साथ पठानकोट (पंजाब) से आए स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज ने धार्मिक समारोह में आई संगत को गुरु प्रवचनों से निहाल किया। और हजारों की संख्या में मौजूद संगत को भाईचारे व श्री गुरु रविदास जी महाराज के बताए मार्ग पर चलने का संद. `श दिया। प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए थे। जगह जगह पर पुलिस, सीआरपीएफ व सेना के साथ प्राइवेट

सिक्योरिटी के जवान तैनात रहे।

राजौरी के जवाहर नगर से आयोजित शोभा यात्रा को मुख्य रूप से पठानकोट से आए स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज ने हरि ध्वजारोहण कर

शोभा यात्रा को आरंभ किया। शोभा यात्रा में पंज प्यारों के साथ ढोल नगाड़े व जयघोष लगाए जा रहे थे। शोभा यात्रा (झांकी) जवाहर नगर,

पंजा चौक, डाक बंगला सड़क, मालमंडी चौराहे, अब्दुल्ला पुल , बेला पुल, आनंदपुर आश्रम मार्ग, तारिक पुल से नेशनल हाईवे राजौरी–जम्मू से सैलानी पुल से होते हुए न्यू बस स्टेंड राजौरी मुख्य समारोह स्थल पर पहुंची। यात्रा में विधायक राजौरी इफ्तखार अहमद , जम्मू–कश्मीर पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी व गणमान्य आदि लोग मौजूद थे और समारोह स्थल पर स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया।

स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा कि सभी को गुरु की वाणी से जुड़कर संतों की संगति अपनानी चाहिए। उन्होंने चंदन वृक्ष का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे चंदन अपने आसपास के वातावरण को भी सुगंधित कर देता है, वैसे ही हमें भी अपने अच्छे कर्मों से समाज को सकारात्मक दिशा देनी चाहिए। उन्होंने नशे से दूर रहने, मन को स्वच्छ रखने और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मन चंगा तो कठौती में गंगा अर्थात यदि मन शुद्ध है तो जीवन स्वयं पवित्र बन जाता है। ऐसा कोई कार्य न करें जो इंसानियत को ठेस पहुंचाए, बल्कि गुरु के बताए मार्ग पर चलकर समाज को मजबूत बनाएं।

इस अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं ने गुरु जी एवं स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया तथा लंगर प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में गुरु रविदास सभा राजौरी, पठानकोट सुरक्षा समिति सहित अनेक सेवाभावी संगठनों और गणमान्य सेवकों की सक्रिय भागीदारी रही।

प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। शोभायात्रा मार्ग पर जगह–जगह पुलिस, सीआरपीएफ, सेना एवं निजी सुरक्षा कर्मियों की तैनाती रही।

इंडिया एआई, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, और आईआईटी हैदराबाद ने सामाजिक सशक्तिकरण के लिए समावेशन कार्य समूह बैठक की मेजबानी की

सबका जम्मू कश्मीर

इंडिया ए आई मिशन, इलेक्ट्रॉनिक एवम् सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (डमपजल) ने आईआईटी हैदराबाद के सहयोग से आज आईआईटी हैदराबाद परिसर में सामाजिक सशक्तिकरण के लिए समावेशन पर कार्य समूह बैठक की मेजबा. नी की।

इस बैठक में वरिष्ठ नीति निर्माता, शैक्षणिक नेता, उद्योग विशेषज्ञ और शोधकर्ता एकत्र हुए ताकि समावेशी एआई विकास, एआई की सामाजिक स्वीकार्यता बढ़ाने और एआई द्वारा संचालित अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित करने पर राष्ट्रीय चर्चाओं को आगे बढ़ाया जा सके।

यह बैठक इंडिया ए आई प्रभाव सम्मेलन 2026 का अग्रदूत है, जिसका आयोजन 16–20 फरवरी 2026 को नई दिल्ली में होने वाला है।

और यह पूरे देश में आयोजित की जा रही कार्य समूह परामर्श श्रृंखला का भी हिस्सा है ताकि शिखर सम्मेलन की विषयगत एजेंडा और परिणामों को जानक. ारी प्रदान की जा सके।

उद्घाटन सत्र में कार्य समूह के भारतीय अध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल, महाराष्ट्र सरकार के मुख्य सचिव; राजदूत थॉमस श्नाइडर, स्विट्जरलैंड के संघीय संचार कार्यालय के निदेशक; प्रो. बी.एस. मूर्ति, आईआईटी हैदराबाद के निदेशक; डॉ. नलिन कुमार श्रीवास्तव, डमपजल के एआई एवं ईटी डिवीजन के अतिरिक्त निद. `शक; तथा श्री ची. भारत रेड्डी, तेलंगाना सरकार के संयुक्त निद. `शक (ई–गवर्नेंस) के उद्बोधन हुए। सभी वक्ताओं ने भारत की एआई यात्रा के केंद्र में समावेशन, विश्वास और सामाजिक संदर्भ को स्थापित करने के महत्व पर बल दिया।

Helpline

पुलिस स्टेशन	
बाग–ए–बहू	2459777
बख्शी नगर	2580102
बस स्टैंड	2575151
शहर	2543688
गांधी नगर	2430528
गंग्याल	2482019
नौबाद	2571332
पक्का डांगा	2548610
रेलवे स्टेशन	2472870
सैनिक कॉलोनी	2462212
सतवारी	2430364
चन्नी हिम्मत	2465164
ट्रांसपोर्ट नगर	2475444
त्रिकुटा नगर	2475133
गांधी नगर	2459660
एसएसपी शहर	2561578
एसपी शहर उत्तर	2547038
एसपी दक्षिण	2433778
सार्वजनिक उपयोगिता सेवाएँ	
इंडियन एयर लाइन्स	
शहर कार्यालय	2542735
एयर पोर्ट	2430449
जेट एयर वेज्	2453999
सिटी ऑफिस	2573399
रेलवे	
रेलवे पूछताछ	131, 132, 2476407
बुकिंग	2470318
आरक्षण	2470315

पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग स्टेशन	
बख्शी नगर	2543557
गांधी नगर	2430786
कंपनी बाग	2542582
नया प्लॉट	2573429
पंजतीर्थी	2547537
दूरसंचार विभाग	
डायरेक्टरी पूछताछ	197
फॉल्ट रिपेयर	198
ट्रंक बुकिंग	180
बिलिंग शिकायत	2543896
जम्मू नगर पालिका	
जं. लाइन्स	2578503
प्रशासन अधिकारी	2542192
स्वास्थ्य अधिकारी	2547440
डाक सेवाएँ	
मुख्य डाकघर शहर	2543606
गाँधी नगर	2435863
अग्निशमन सेवाएँ	
नियंत्रण कक्ष	101,132, 2476407
शहर	2544263
गाँधी नगर	2457705
नहर	2554064
गंग्याल	2480026
रसोई गैस डीलर	
चिनाब गैस	2547633
गुलमौर गैस	2430835
जैकफेड	2548297
एचपी गैस	2578456
शिवांगी गैस	2577020
तवी गैस	2548455
पावर हाउस	
गाँधी नगर	2430180
नहर रोड	2554147
जानीपुर	2533828
नानक नगर	2430776

परेड	2542289
सतवारी कैंट	2452813
अस्पताल	
जीएमसी अस्पताल	2584290
एस.एम.जी.एस. अस्पताल	2547635
सी.डी. अस्पताल	2577064
डेंटल अस्पताल	2544670
गांधी नगर अस्पताल	2430041
सरवाल अस्पताल	2579402
जी.बी. पंत कैंट अस्पताल	2433500
आयुर्वेदिक कॉलेज	2543661
सी.आर.पी. अस्पताल	2591105
आचार्य श्री चंदर	2662536
मानसिक अस्पताल	2577444
स्वामी विवेकानंद	2547418
ब्लड बैंक	2547637
एम्बुलेंस	2584225, 2575364
एम्बुलेंस (रेड क्रॉस)	2543739
नर्सिंग होम	
मददन अस्पताल	2456727
मेडिकेयर	2435070
त्रिवेणी नर्सिंग होम	2452664
सुविधा नर्सिंग होम	2555965
अल. फिरदौस नर्सिंग होम	2545050
आस्था नर्सिंग होम	2576707
बी एन चौरिटेबल ट्रस्ट	2505310
चोपड़ा नर्सिंग होम	2573580
हरबंस सिंह मेम हॉस्पिटल	2541952
जीवन ज्योति	2576985
युद्धवीर नर्सिंग होम	2547821
मीडियाएड नर्सिंग होम	2466744
सीता नर्सिंग होम	2435007
विभूति नर्सिंग होम	2547969
रामेश्वर नर्सिंग होम	2580601
बी एन चेरिटेबल	2555631
महर्षि दयानंद	2545225

मेंढर के युवाओं ने भारतीय सेना का जताया आभार, प्रशिक्षण से बदली ज़िंदगी

राजेश कुमार

मेंढर (पुंछ) : मेंढर क्षेत्र के युवाओं ने भारतीय सेना द्वारा दिए गए प्रशिक्षण के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया है। युवाओं का कहना है कि सेना के इस विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और आज वे उसी के कारण रोजगार प्राप्त करने में सफल हो सके हैं।

स्थानीय युवाओं के अनुसार, भारतीय सेना ने उन्हें अनुशासन, मेहनत, आत्मविश्वास और तकनीकी कौशल का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण से युवाओं में न केवल आत्मनिर्भर बनने का भरोसा बढ़ा, बल्कि वे विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी पाने के योग्य भी बने। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद कई युवाओं को सरकारी विभागों और निजी संस्थानों में रोजगार मिला है। युवाओं का कहना है कि सेना का यह प्रयास सीमावर्ती क्षेत्रों के युवाओं के लिए एक नई उम्मीद बनकर सामने आया है।

युवाओं ने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी भारतीय सेना ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती रहेगी, ताकि अधिक से अधिक युवा आत्मनिर्भर बन सकें और समाज की मुख्यधारा से जुड़ें।

यशपाल निर्मल के जीवन और कार्यों पर आधारित पुस्तक विश्व पुस्तक मेले 2026 में लोकार्पित

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू : जाने–माने डोगरी साहित्यकार, बाल साहित्यकार और कवि श्री यशपाल निर्मल के जीवन और कार्यों पर आधारित पुस्तक, जिसे डॉ. आशु शर्मा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली पुरस्कार विजेता ने लिखा है, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली के स्टॉल पर विश्व पुस्तक मेले 2026 में लोकार्पित की गई।

इस अवसर पर जाने–माने कवि और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के डोगरी सलाहकार बोर्ड के पूर्व सदस्य श्री राजिंदर रांझा मुख्य अतिथि थे और स. गगन संधू, पंजाबी में साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार विजेता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। जबकि प्रख्यात साहित्यकार श्री अशोक पांडेय, श्री केशव मोहन पांडेय, संयोजक सर्व भाषा ट्रस्ट, श्री अरविंद तिवारी, साहित्य अकादमी साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेता और स. गुरसेवक सिंह पंजाबी विद्वान और ग़ज़लकार कवि इस अवसर पर विशेष अतिथि थे।

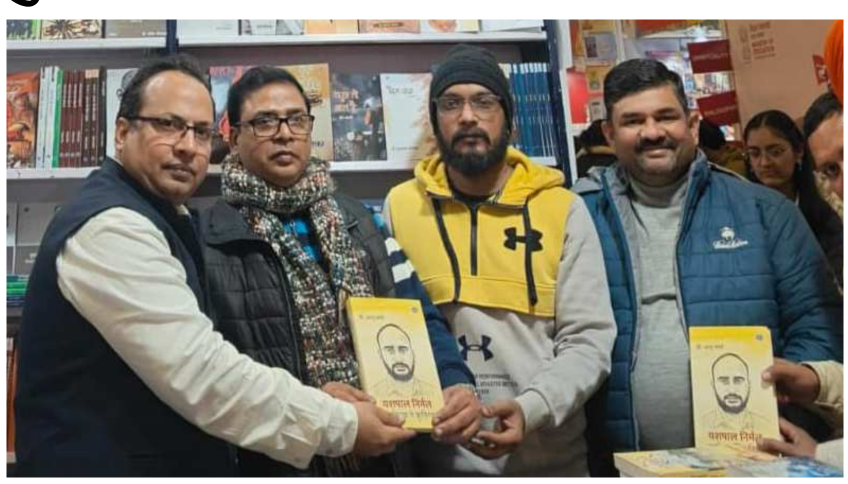

इस 200 पृष्ठों की पुस्तक में डॉ. आशु शर्मा ने यशपाल निर्मल के जीवन और कार्यों पर आधारित विभिन्न शोध लेखों में संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए हैं। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि राजिंदर रांझा ने कहा कि यशपाल निर्मल अपने आप में एक आंदोलन हैं। उन्होंने कविता, गद्य, बाल साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में लिखा है। उनका बाल उपन्यास 'छुट्टियां' भारत की 27 प्रमुख भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। वह पिछले 35 वर्षों से डोगरी कला मंच, अखिल भारतीय डोगरा संस्कृति मंच और डोगरी भाषा अकादमी, जम्मू के बैनर तले युवा पीढ़ी को डोगरी भाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में स. गगन संधू ने कहा कि यशपाल निर्मल न केवल डोगरी साहित्यकार और भाषा कार्यकर्ता हैं, बल्कि वह सर्व भाषा ट्रस्ट के राष्ट्रीय अनुसंधान निदेशक भी हैं।

ब्राह्मण विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित

सबका जम्मू कश्मीर

मेरठ। अखिल भारतीय ब्राह्मण हीरोज़ संगठन (संगठन) द्वारा दुर्गा मंदिर, नौचंदी मैदान मेरठ में ब्राह्मण विवाह योग्य युवक–युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में लगभग डेढ़ सौ विवाह योग्य युवक–युवतियों ने भाग लिया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य धर्मेन्द्र भारद्वाज रहे। विशिष्ठ अतिथि विमल शर्मा (सभापति, जिला सहकारी बैंक), सुनील भराला (पूर्व दर्जा प्राप्त मंत्री), राजेन्द्र शर्मा (पूर्व विधायक), विशाल कौशिक (अध्यक्ष ई रिक्शा यूनियन) रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं0 राजेश शर्मा और संचालन राजू शर्मा और त्रिनाथ मिश्रा ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर सभी अतिथियों का फूल–माला और मोमेंटो देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर वैवाहिक परिचय पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य धर्मेन्द्र भारद्वाज ने अपने अतिथि उद्बोधन में कहा कि समाज को जोड़े रखने के लिए वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित होते रहने जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि परिचय सम्मेलन समाज को जोड़े रखने का काम करते हैं।

विशिष्ट अतिथि पं0 सुनील भराला ने ब्राह्मण समाज के गौरवशाली इतिहास से सबको अवगत कराते हुए समाज के लोगों से आह्वान किया कि वे भगवान परशुराम का जीवन–दर्शन पढ़ें और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। पं0 राजेन्द्र शर्मा पूर्व विधायक ने कहा कि ब्राह्मण समाज ने सदा ही समाज को जोड़ने का काम किया है और ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा और दशा मिलेगी।

कार्यक्रम के दौरान ब्राह्मण समाज के हित में काम करने वाले आशु शर्मा, सुमित प्रधान महादेव, महेश शर्मा, पुष्पेन्द्र शर्मा, रविदत्त शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा पार्षद, सुमित शर्मा पार्षद, सुमित मिश्रा पार्षद, भरत शर्मा पार्षद पति, अरविन्द शर्मा, विशाल कौशिक, सुभाष शर्मा, हरीशचंद शर्मा, डॉ0 गलेन्द्र शर्मा, अंकित शर्मा, जितेन्द्र शर्मा, प्रभात शर्मा, दीपक शर्मा, शशि कौशिक, ममता दीक्षित, रेखा शर्मा, राजरानी शर्मा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम सफल बनाने में सुरेशचंद शर्मा, अरविन्द शर्मा, रजनीश शर्मा, विनय शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, विमल शर्मा, ब्रजेश शर्मा, पवन शर्मा, प्राची शर्मा, हिमा गौड़ कौशिक का विशेष योगदान रहा।

कठुआ में पंथ रत्न अकाली कौर सिंह जी निहंग की 73वीं बरसी श्रद्धा से मनाई गई

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : पंथ रत्न अकाली कौर सिंह जी निहंग की 73वीं बरसी गुरुद्वारा चरण कमल साहिब बाख्ता में पूरे धार्मिक श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर अखंड पाठ साहिब के भोग के उपरांत दीवान सजाया गया, जिसमें संगत ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

दीवान के दौरान जिला गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कठुआ के रागी भाई बलजीत सिंह और जम्मू से आए भाई बहादुर सिंह ने मधुर कीर्तन कर संगत को निहाल किया। वहीं, कार्यक्रम के प्रचारक जमीत सिंह ने अकाली कौर सिंह जी निहंग के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने सिख कौम के प्रचार और सेवा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

उन्होंने बताया कि गुरु सोभा, रत्न प्रकाश और सुखसागर उनकी प्रमुख रचनाएं थीं। साथ ही वे सिख रहित मर्यादा लागू करने वाली कमेटी के अहम सदस्य भी रहे, जिसके कारण आज भी उनके विचारों और सिद्धांतों को विशेष महत्व दिया जाता है।

इस मौके पर जिला गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान चरणजीत सिंह भोला ने भी अकाली कौर सिंह जी निहंग द्वारा समाज के हित में किए गए कार्यों की जानकारी दी।

कार्यक्रम का समापन गुरु के लंगर के साथ हुआ, जिसमें पूरी संगत ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर जिला गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उपाध्यक्ष कुलदीप सिंह, महासचिव परवीन सिंह, कोषाध्यक्ष दलजीत सिंह सहित सरदार भूपिंदर सिंह, हरभजन सिंह, कश्मीर सिंह, हरमीत सिंह और अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

साहिब बंदगी के सद्गुरू श्री मधुपरमहंस जी महाराज ने मिश्रीवाला जम्मू में किया प्रवचन, संसार को बताया माया का खेल

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू।जम्मू के मिश्रीवाला क्षेत्र में साहिब बंदगी के सद्गुरु श्री मधुपरमहंस जी महाराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से संगत को निहाल किया। उन्होंने कहा कि जिस तरह इंसान स्वप्न में देखी चीज़ों को सत्य मान लेता है, उसी तरह यह पूरा संसार भी एक सपना है। संसार माया का खेल है, जो इंसान को सच्चा प्रतीत होता है, जबकि वास्तव में यह नित्य नहीं है।

सद्गुरु जी ने कहा कि जब इंसान इस संसार से चला जाता है, तो उसके अपने ही परिजन उसे सपनों में देखने की बातें करते हैं, लेकिन कोई भी सच्चे अर्थों में साथ नहीं देता। उन्होंने कहा कि यह संसार स्वार्थ से भरा है, यहाँ कोई किसी का नहीं है। आज के समय में हालात इतने बदल गए हैं कि लोग संपत्ति के लिए पाप और अपराध तक कर रहे हैं।

उन्होंने समाज में आ रहे नैतिक पतन पर चिंता जताते हुए कहा कि पहले लोग माता–पिता का बहुत सम्मान करते थे, लेकिन आज के युग में लोग संपत्ति के लिए हत्या जैसे अपराध भी कर रहे हैं। यह कलयुग का आरंभिक चरण है, फिर भी इंसान अपने स्वार्थ में अंधा होता जा रहा है। सद्गुरु श्री मधुपरमहंस जी ने आत्मा के अमर लोक के बारे में बताते हुए कहा कि प्रारंभ में केवल सत्य था, संसार, ब्रह्मांड, स्वर्ग, नरक, सूर्य, चंद्रमा और तारे बाद में बने। धर्मशास्त्रों के अनुसार परमात्मा और आत्मा अलग नहीं हैं, जैसे आग से उसकी गर्मी अलग नहीं की जा सकती।

उन्होंने जोर देकर कहा कि बिना गुरु के न तो सच्चा ज्ञान मिलता है और न ही मोक्ष संभव है।

मनुष्य शरीर दुर्लभ है, जिसे 84 लाख योनियों के बाद प्राप्त किया जाता है। इसलिए इस जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। संसार अनित्य है, जबकि आत्मा नित्य है, इस सत्य को समझकर परम सत्ता की प्राप्ति की ओर बढ़ना ही जीवन का उद्देश्य है।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

राजबाग पुलिस ने 10 लीटर अवैध देसी शराब के साथ एक महिला को किया गिरफ्तार

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : जिला कठुआ में अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करते हुए जम्मू–कश्मीर पुलिस ने कोटपुन्नू (थाना राजबाग) क्षेत्र से लगभग 10 लीटर अवैध देसी शराब के 38 पाउच बरामद किए हैं। इस दौरान एक महिला को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस को सूचना मिली थी कि एक महिला सलालपुर से कोटपुन्नू की ओर बिक्री के लिए अवैध देसी शराब ले जा रही है।

सूचना के आधार पर थाना राजबाग पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए महिला को मौके पर रोक लिया। तलाशी के दौरान उसके पास मौजूद प्लास्टिक बैग से अवैध देसी शराब बरामद हुई।

गिरफ्तार महिला की पहचान ट्विंकल पत्नी सुभाष / रवि, उम्र 27 वर्ष, निवासी घाटी, अस्थायी पता सलालपुर, तहसील मढ़ीन, जिला कठुआ के रूप में हुई है।

इस मामले में थाना राजबाग में एफआईआर संख्या 09/2026, धारा 48(ए) आबकारी अधि. नियम के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है।

लखनपुर पुलिस ने 12.07 ग्राम चिट्टा के साथ नशा तस्कर किया गिरफ्तार

सबका जम्मू कश्मीर

लखनपुर : जिले में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत जम्मू–कश्मीर पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल की है। इस अभियान के अंतर्गत पुलिस ने थाना लखनपुर क्षेत्र में प्रभावी कार्रवाई करते हुए एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया है और उसके कब्जे से भारी मात्रा में मादक पदार्थ बरामद किया गया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार, लखनपुर थाना क्षेत्र में गश्त के दौरान पुलिस दल ने मंगरखड़ से लखनपुर की ओर आ रहे एक व्यक्ति को संदिग्ध अवस्था में देखा। पुलिस को देखकर व्यक्ति की गतिविधियां असामान्य प्रतीत हुईं, जिसके बाद उसे रोककर तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसके पास से लगभग 12.07 ग्राम चिट्टा (हेरोइन) बरामद किया गया, जिसे तुरंत कब्जे में ले लिया गया।

प्रारंभिक पूछताछ में गिरफ्तार आरोपी ने अपना नाम वसीम अकबर पुत्र मोहम्मद परवेज, निवासी प्रेता, तहसील बसोली, जिला कठुआ बताया। पुलिस का कहना है कि आरोपी लंबे समय से नशीले पदार्थों की तस्करी में संलिप्त हो सकता है और उससे जुड़े नेटवर्क के बारे में भी जानक. ारी जुटाई जा रही है।

इस संबंध में थाना लखनपुर में एफआईआर संख्या 06/2026 के तहत एनडीपीएस एक्ट की संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया गया है।

स्कूल समय बढ़ाएं, शीतकालीन अवकाश नहीं:- जम्मू-कश्मीर आरईटी टीचर्स फोरम

अनिल भारद्वाज

जम्मू/राजौरी : आफताब तनत्रे जिला अध्यक्ष, जम्मू एवं कश्मीर रहबर–ए–तालीम टीचर्स फोरम, राजौरी ने निदेशक स्कूल शिक्षा जम्मू, डॉ. नसीम जावेद चौधरी से अपील की है कि वे शीतकालीन अवकाश को आगे बढ़ाने के बजाय वर्तमान ठंडे मौसम को देखते हुए स्कूल समय में संशोधन करें।

उन्होंने प्रस्ताव रखा कि स्कूल का समय सुबह 9रू30 बजे से बदलकर 10रू30 बजे किया जाए, जबकि समापन समय 3रू30 बजे यथावत रखा जाए, ताकि छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित हो और पढ़ाई प्रभावित न हो।

तनत्रे ने कहा कि यह समय शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अधिकांश कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाएं फरवरी के तीसरे सप्ताह से शुरू होने वाली हैं। इस चरण में छात्रों को नियमित कक्षा पुनरावृत्ति, मार्गदर्शन और परामर्श की अत्यधिक आवश्यकता होती है, जिसे लंबी छुट्टियां गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि छात्र पहले ही शैक्षणिक सत्र के दौरान ऑपरेशन सांडूर, ग्रीष्मकालीन अवकाश, मानसून छुट्टियां, पूजा अवकाश और अब विस्तारित शीतकालीन अवक. ाश के कारण कई बार पढ़ाई में बाधा झेल चुके हैं। किसी भी अतिरिक्त विस्तार से भारी शैक्षणिक नुकसान होगा।

अपने लंबे समय से चले आ रहे मांग को दो. हराते हुए, श्री तनत्रे ने पीर पंजाल क्षेत्र के लिए अलग शैक्षणिक एवं अवकाश कैलेंडर की मांग की, क्योंकि वहां की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियां भिन्न हैं। उन्होंने कहा कि पहाड़ी इलाकों में भारी वर्षा, अचानक बाढ़ और कठोर मौसम के कारण अक्सर स्कूल जाना असुरक्षित हो जाता है।

उन्होंने यह भी कहा कि निदेशक स्कूल शिक्षा जम्मू, जो स्वयं राजौरी जिले से हैं, इन जमीनी वास्तविकताओं से भली–भांति परिचित हैं और आशा जताई कि विभाग क्षेत्र–विशेष, व्यावहारिक और छात्र–हितैषी निर्णय लेगा जो शिक्षा के व्यापक हित में होगा।

बिलावर में सुरक्षा बलों की बड़ी कामयाबी, तीन आतंकी ठिकाने ध्वस्त

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : कठुआ पुलिस ने अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर जिले के बिलावर क्षेत्र में संयुक्त अभियान चलाकर तीन आतंकी ठिकानों का भंडाफोड़ किया है।

पुलिस को कामड़ नाला, कलाबन और आसपास के जंगल क्षेत्रों में आतंकियों की गति. विधियों की पुख्ता सूचना मिली थी। इसके बाद सुरक्षा बलों ने व्यापक तलाशी अभियान शुरू किया। अभियान के दौरान आतंकियों ने सुरक्षा बलों पर फायरिंग की, जिसके जवाब में मुठभेड़ हुई।

तलाशी के दौरान पहले ठिकाने से खाली कारतूस, खाद्य सामग्री, कंबल, तिरपाल और रोजमर्रा के इस्तेमाल का सामान बरामद किया गया। इसके बाद 16 जनवरी 2026 को कालीखड्ड और कलाबन क्षेत्रों में दो और आतंकी ठिकाने पकड़े गए, जहां से गैस सिलेंडर, खाना पकाने के बर्तन, टॉर्च, दस्ताने और खाने–पीने का सामान मिला।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कठुआ मोहिता शर्मा ने बताया कि तलाशी अभियान अभी जारी है और जिले में शांति व सुरक्षा बनाए रखने के लिए पुलिस पूरी तरह सतर्क और प्रतिबद्ध है।

ग़ज़ल

जन्नत का पहनावा पा कर आई फिर बसंत
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत
धरती दुल्हन भांति सजा कर आई फिर बसंत
खुशबू के अलंकार सुशेभित तेज़ हवाओं में।
सरस्वती के उत्सव चार चुफेरे राहों में।
वनस्पति के बीच नहा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
अठखेलियों के मनमौजी दृश्य–दर्शन ले कर।
मौसम परिवर्तन वाले मीठे अर्पण ले कर।
निर्मलता का संतोष उठा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
फसलों, फूलों के जोबन का बेपरवाह स्वागत।
कुदरत के हस्ताक्षर करके लिख दी है ईबादत।
धूप के साथ छांव नचा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
गन्ने का रस, रेवडी, गच्चक, भुग्गा, मूंगफली।
खिचडी, साग, दहीं, मक्खन, घी मिश्री की डली।
ज़ायकेदान त्योहार बना कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
सांझ की वारिस, ऋतुयों की रानी कहला कर।
अभिवादन करती फुलकारी का घुंघट उठा कर।
चंचलता भीतर शरमा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
अम्बर में की है चित्रकारी डोर, पतंगों ने।
एक अलौकिक सुन्दर तोहफा दिया रंगों ने।
खुशियों की उपमा अपना कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।
मानवता की आशा, चरित्र अंगीकार बने।
घर–घर में ही बालम प्यार बने, सत्कार बने।
रंगों–धर्मों को समझा कर आई फिर बसंत।
जन्त का पहनावा पा कर आई फिर बसंत।

बलविंदर "बालम" गुरदासपुर
ओंकार नगर, गुरदासपुर पंजाब
मों – 98156–25409

पुंछ में कांग्रेस के नवनियुक्त डीसीसी अध्यक्ष शहनवाज़ चौधरी का जोरदार स्वागत, मनरेगा को लेकर भाजपा पर साधा निशाना

राजेश कुमार

पुंछ : जिला कांग्रेस कमेटी (डीसीसी) पुंछ के नवनियुक्त अध्यक्ष शहनवाज़ चौधरी का आज डाक बंगला, पुंछ में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। बड़ी संख्या में पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनका अभिनंदन किया। कांग्रेस हाईकमान ने संगठन सृजन अभियान के तहत शहनवाज़ चौधरी को डीसीसी अध्यक्ष नियुक्त किया है और पार्टी संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने की जिम्मेदारी सौंपी है। इससे पहले वे ओडिशा के प्रभारी एआईसीसी सचिव रह चुके हैं। साथ ही वे जेक. `पीसीसी के उपाध्यक्ष, महासचिव और यूथ कांग्रेस व एनएसयूआई में कई अहम पदों पर काम कर चुके हैं।

स्वागत कार्यक्रम के बाद शहनवाज़ चौधरी ने वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के साथ प्रेस वार्ता की। इस दौरान उन्होंने भाजपा पर मनरेगा (डळछत्म. ळ।) योजना को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा रोजगार गारंटी योजना के बजट में कटौती कर ग्रामीण लोगा. `के हक को छीनने का काम कर रही है।

उन्होंने यह भी कहा कि योजनाओं के नाम बदलकर, जैसे "टठ ळ–र|ड–ळ", जनता का ध्यान असली समस्याओं से हटाया जा रहा है। इससे ग्रामीण और पहाड़ी इलाकों की परेशानियों पर चर्चा दब जाती है।

इसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मनरेगा को कमजोर करने के विरोध में प्रतीकात्मक प्रदर्शन किया। शहनवाज़ चौधरी ने कहा कि मनरेगा डॉ. मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी और राहुल गांधी की दूरदर्शी सोच का परिणाम है, जिससे खासकर ग्रामीण महिलाओं और गरीबों को मजबूती मिली है।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि वे सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर कांग्रेस को पुंछ में मजबूत करेंगे। उन्होंने विश्वास जताया कि एकजुट होकर कांग्रेस पार्टी जिले में सबसे मजबूत राजनीतिक ताकत बनेगी।

इस मौके पर ताज मीर, सिकंदर नूरानी, रियाज़ नाज़, वहीद शाह, राशीद कसाना, आरिफ मनहास, आसिफ मीर, हाजी फ़ज़ल, फारूक च, कुशदेव वर्मा, सुभाष खुजरिया, एडवोकेट शेराज़ बज्जर, एजाज़ च, मदसर चौधरी, फ़ैज़ दीवान सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लरू में 5 फरवरी को बाबा दर्शन शाह चिश्ती की दरगाह पर 24वां सूफी मेला व भंडारा

राम सिंह

लरू/पंजाब। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 फरवरी 2026 को बाबा दर्शन शाह चिश्ती की दरगाह पर 24वां सूफी मेला एवं भंडारा श्रद्धा और धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। यह धार्मिक आयोजन लरू में संपन्न होगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है।

मेले की शुरुआत दरगाह पर ध्वजारोहण और चादरपोशी की रस्म से होगी, जिसे बाबा सरदारी शाह जी द्वारा अदा किया जाएगा। शाम के समय दरगाह परिसर में सूफियाना महफिल का आयोजन किया जाएगा, जिसमें दीनानगर के सोनू एंड पार्टी के लखा साईं कव्वाल कव्वालियां प्रस्तुत करेंगे। इसके अलावा अन्य कलाकार भी अपनी प्रस्तुतियों से माहौल को भक्तिमय बनाएंगे। मेले के दौरान गुरु का अटूट लंगर दिन–रात श्रद्धालुओं के लिए जारी रहेगा। मेले की जानकारी बाबा सरदारी शाह जी से प्राप्त हुई है। उन्होंने बताया कि यह सूफी मेला आसपास की संगत के सहयोग से हर वर्ष आयोजित किया जाता है।

आयोजकों ने श्रद्धालुओं से अधिक संख्या में पहुंचकर मेले की शोभा बढ़ाने की अपील की है।

गणतंत्र दिवस से पहले बिल्लावर में 'स्वच्छतंत्र 2.0' जागरूकता रैली का आयोजन

सबका जम्मू कश्मीर

बिलावर/कठुआ। गणतंत्र दिवस से पहले नगर समिति बिलावर द्वारा 'स्वच्छतंत्र 2.0' अभियान के तहत आज स्वच्छता और नशा मुक्ति को लेकर एक जागरूकता रैली निकाली गई। रैली का उद्देश्य लोगों को साफ–सफाई रखने और नशा मुक्त समाज बनाने के लिए जागरूक करना था।

रैली एडीसी कार्यालय बिलावर से शुरू होकर तहसीलदार कार्यालय बिलावर में संपन्न हुई। इस दौरान लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई और नागरिक कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी गई।

रैली का नेतृत्व विनय खोसला (जेकेएएस), एडीसी बिलावर ने किया। इस मौके पर तहस. ीलदार बिलावर सुरिंदर सिंह, कार्यकारी अधिक. ारी नगर समिति वरिंदर पॉल सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। सभा को संबोधित करते हुए एडीसी बिल्लावर ने कहा कि स्वच्छता और नशा मुक्त भारत अभियान को सफल बनाने के लिए आम लोगों की भागीदारी जरूरी है।

उन्होंने बताया कि 19 से 26 जनवरी तक 'वंदे मातरम्दृफेज टू' के तहत बिलावर उपमंडल में देशभक्ति और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान और नशा विरोधी गतिविधियाँ 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने में मददगार होंगी। इस अवसर पर स्थानीय नागरिकों ने भी स्वच्छता और समाज सुधार में सहयोग करने की अपील की।

मकर संक्रांति पर्व पर हवन यज्ञ का आयोजन

विधायक आर एस पठानिया और पूर्व मंत्री यामलाल चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे

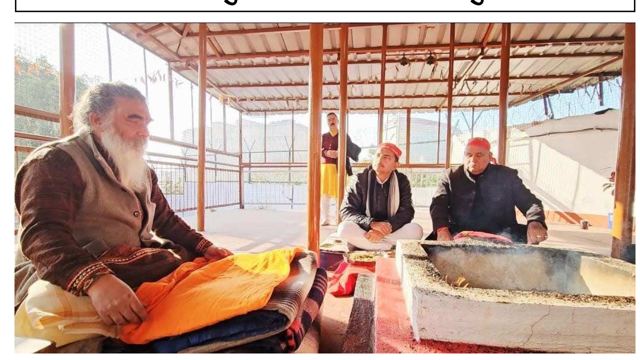

रोहित शर्मा

कटरा : श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के आध्यात्मिक विकास केंद्र, कटरा में मकर संक्रांति के पावन अवसर पर एक भव्य धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया। मकर संक्रांति को हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है।

इस दिन सूर्य देव दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर गमन करते हैं, जिसे शुभ परिवर्तन और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। इसी आध्यात्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर विशेष हवन–यज्ञ का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान वैदिक ऋषि द्वारा अथर्ववेद और यजुर्वेद के मंत्रों का विधिवत उच्चारण किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण भक्तिमय और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो गया।

इस पावन अनुष्ठान में उधमपुर के विधायक आर.एस. पठानिया तथा पूर्व राज्य मंत्री श्यामलाल चौधरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। दोनों नेताओं ने विधि–विधान से यज्ञ में आहुति अर्पित की और देश तथा समाज के कल्याण की कामना की।

हवन–यज्ञ का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की उन्नति, भारत सहित पूरे विश्व में शांति, सौहार्द और समृद्धि की प्रार्थना करना था।

एसकेयूएएसटी–जम्मू में फाइनल तक पहुँची टीम

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू/हीरानगर। सरकारी गिरधारी लाल डोगरा कॉलेज (जीडीसी), हीरानगर ने एक बार फिर शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। कॉलेज के विद्यार्थियों की टीम कृ चिन्मय शर्मा, शावी शर्मा, मोहित शर्मा एवं राजन शर्मा कृ ने शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (एसकेयूएएसटीदृजे) में आयोजित एग्रीथोन 2.0 के लेवल–III (फाइनल) प्रेज़ेंटेशन में सफलतापूर्वक भाग लेकर कॉलेज का नाम रोशन किया।

प्रतिस्पर्धा के प्रारंभिक लेवल–I और लेवल–II जैसे कठिन चरणों को पार करने के बाद टीम ने कृषि क्षेत्र से जुड़ी समकालीन समस्याओं पर आधारित एक नवाचारी और शोध–आधारित समाधान प्रस्तुत किया।

फाइनल राउंड में चयन जीडीसी हीरानगर में विकसित हो रही शोधपरक सोच, अकादमिक अनुशासन और नवाचार संस्कृति का प्रमाण माना जा रहा है।

यह सहभागिता कॉलेज की माननीय प्राचार्या प्रो. (डॉ.) प्रज्ञा खन्ना के संरक्षण एवं निरंतर प्रोत्साहन में संपन्न हुई, जिनके नेतृत्व में छात्र नवाचार और उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हैं। वहीं, वनस्पति विज्ञान विभाग के डॉ. हरविंदर कौर और डॉ. रमन कुमार के मार्गदर्शन में छात्रों ने अपने विचारों को एक प्रभावी और व्यावहारिक प्रस्तुति का रूप दिया।

उल्लेखनीय है कि एग्रीथोन 2.0, जिसकी शुरुआत जुलाई 2025 में हुई थी, कृषि क्षेत्र की उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए नवाचार, समस्या–समाधान और कौशल विकास को बढ़ावा देने वाली एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पहल है। इस मंच पर जीडीसी हीरानगर के छात्रों का प्रदर्शन कॉलेज की अनुभवात्मक शिक्षा और अंतर्विषयक शोध के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

3केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और दुग्ध उत्पादन मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने इज़राइल का दौरा किया; मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र में भारत-इज़राइल सहयोग को मजबूत किया

सबका जम्मू कश्मीर

केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और दुग्ध उत्पादन मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह के नेतृत्व में एक उच्च–स्तरीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 13–15 जनवरी 2026 को इज़राइल के ईलात में आयोजित ष्ब्लू फूड सिक्योरिटीरू सी द फ्यूचर 2026ष् विषय पर दूसरे वैश्विक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इज़राइल की सफल आधिकारिक यात्रा संपन्न की।

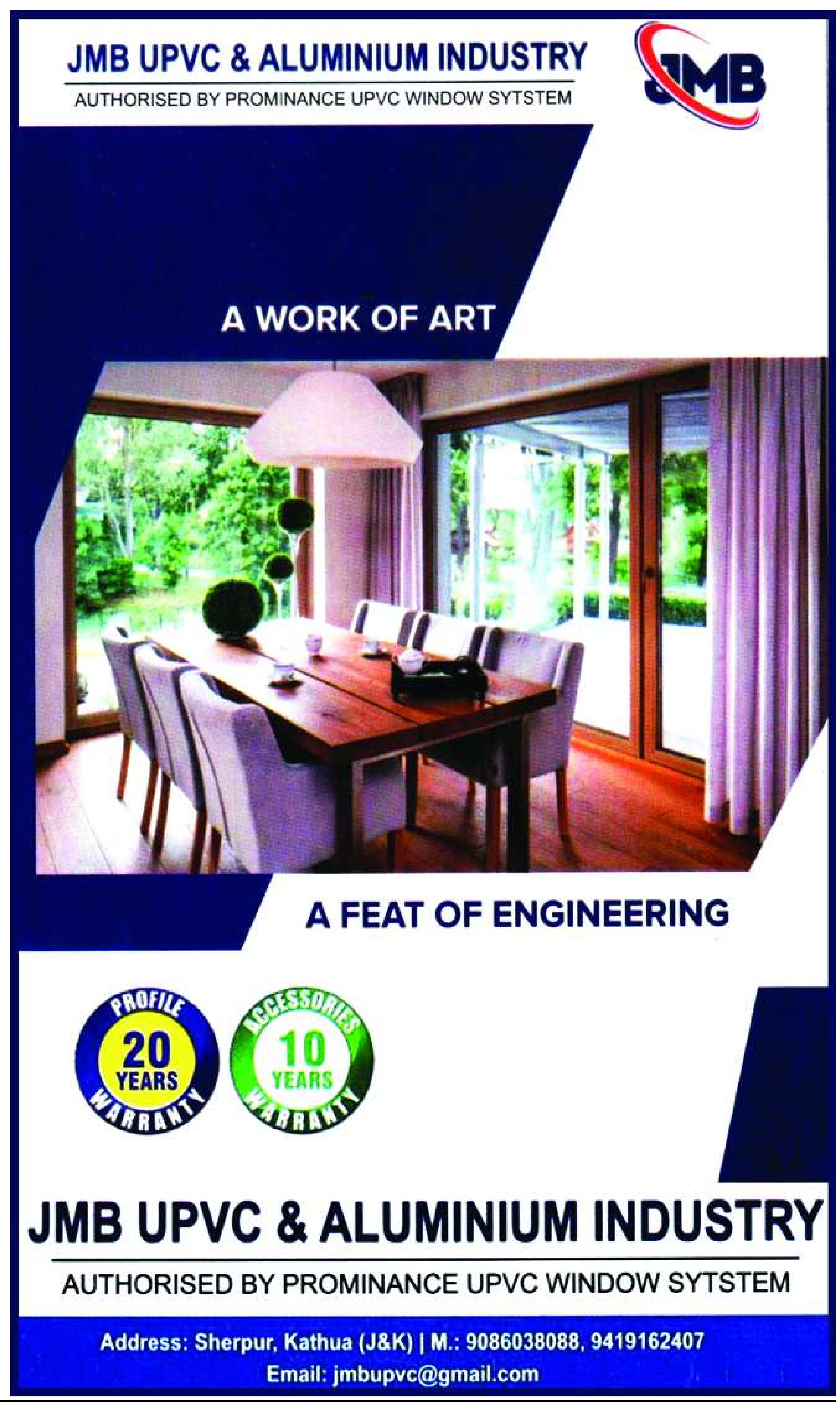

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशकः राज कुमार द्वारा एम/एस डी. आर प्रिंटिंग प्रेस, बैन बजाल्ता, तहसील जम्मू से मुद्रित एवं नगरी पैरोल नगरी, जिला कठुआ, जम्मू और कश्मीर पिन.कोड नं: 184151 । संपादकः राज कुमार